लि पि प्र का श न

जयवंत दलवी

मूल मराठी नाटक का अनुवाद

अनुवादक

डा० कुसुम कुमार

सध्याछाया

[एक साधारण-सा मध्यमवर्गीय कमरा। प्रेक्षकों के दायी तरफ एक दरवाजा। वही से स्नानघर और रसोईघर को आने जाने का रास्ता। बाहर आने-जाने के लिए प्रेक्षको के सामने एक और दरवाजा। इस दरवाजे के बाहर एक लम्बी बालकनी दिखाई देती है। बालकनी के नीचे सडक और सडक पर जलता हुआ एक लैम्प भी दिखाई देता है। बालकनी पर रखा हुआ एक गमला जिसमे लगी हुई बेल का फैलाव ऊपर तक पहुचा हुआ नजर आता है।

बीच वाले दरवाजे की दायी ओर एक बडी खिडकी है। वही एक छोटा स्टूल रखकर प्राय नानी बैठी रहती है। कमरे मे गिनी चुनी कुछ चीजें है। प्रेक्षको के सामने बायी तरफ का एक मेज और एक कुर्सी है। मेज पर एक टेबल लैम्प और ज्ञानेश्वरी की प्रति रखी है। दो सादी चारपाइया और कमरे के एक कोने मे टेलीफोन भी रखा है।

परदा ऊपर उठता है। रसोईघर से धीरे धीरे पैर घसीटती हुई नानी बाहर आती है। उसका दाया पाव सायटिका के कारण दुखता है। नौ गज की साडी पहन रखी है। अभी अभी सिर धोया लगता है। अगोछे से बाल पोछती हुई वह बाहर आती है और खिडकी के पास रखे स्टूल पर बैठ जाती है। खिडकी से सुबह की धूप आ रही है। इसी धूप मे वह बाल सुखाने के लिए बैठी रहती है। उसके बाल वैसे कुछ पके हुए हैं और वय भी पचपन-साठ के बीच जरूर लगती है।

तभी अन्दर से नाना आते हैं। वय साठ-पैंसठ के बीच होगी। उनके पूरे बाल सफेद हैं। स्वास्थ्य वैसे ठीक है पर कुछ वर्ष पहले बाथरूम मे गिर

पडने के कारण उनके घुटने पर स्टनलेस स्टील की कटोरी बिठाई हुई है। घुटने मे दद रहता है, यह उनक चलने स ही पता चलता है। सहज ही यह घुटना वह मोड भी नही सकत। इस समय उनकी धाती पानी गिरने से काफी गीली हो गई है कमर मे भी कुछ दद है। कमर पर हाथ रखकर ही वे बाहर आत है।]

नानी पकडी गई ना कमर ?

नाना (बनावटी जोर दिखाते हुए) कमर किसलिए पकडी जाएगी ? मैं कोई बुडढा हो गया हू ? (सीधे होने का प्रयत्न करते हैं।)

नानी तो भी औरता का काम औरता को ही (आप ही आप हसती है।)

नाना बालो को साबुन लगाने का काम सिफ औरता का ही होता है ? तो फिर हम अपने बालो को क्या लगाते हैं ?

नानी आपके बालो की बात और है हमारी और !

नाना हमारी 'बात और' किसलिए ? बालो को साबुन लगाकर मलना ही तो है !

नानी अच्छे मले हैं ! सारे बालो का गुच्छा बना के रख दिया ! अब इन्हे सुलझाते-सुलझात मेरे हाथ टूट जाएगे ! तल तक नहीं निकला बालो का ! महीना भर सुनाल ऊपर स और रहेगे तेरे बाल धोए तेरे बाल धोए ।

नाना (झूठमूठ चिढकर) तू भी ऐसी है ऐसी है कि बस ! एक एक काम पहले तो करवा लेगी और बाद म दोष निकालती रहेगी !

नानी कौन सा काम करवा लेती हू आपसे ?

नाना बाला को साबुन लगाता हू तेरे रात को नीद जब नही आती तो तेल मलता हू ! तल मलवा लेती है तो वैसे चिढ चिढ करती है कि कानो तक बह आया ! पुरानी आदत है तरी ! बूढी हो गई पर गई नही !

नानी हा बूढी हू रहने दो मुझे बूढी ! आप तो (नाना एकदम कमर सीधी करते हैं) अन्दर जाइए और धोती बदल लीजिए ।

नाना (आलस्य से) बदल कर क्या करना है ?

नानी (जरा चिढकर) करना मतलब क्या ! सारी धोती भीग गई है छीक्त रहग खासत रहगे फिर विक्स मलो काढा बनाओ मुझसे नही हाता अब य सब ! (नाना चुपचाप अन्दर चले जाते हैं। नानी उठती है।) अन्दर गए हैं और धोती यही पडी है। शुक्र है, पाखाने का डिब्बा ठिकाने पे रखा मिलता है।

[खूटी पर स धोती उतारती है। तभी अन्दर धाती न पाकर नाना परेशान हुए से बाहर आत है और नानी से धोती लेकर अदर चले जाते हैं। नानी का ध्यान दीवार पर नगे कैलेंडर की तरफ जाता है। छोटा स्टूल लाकर दीवार के साथ लगाकर रखती है और प्रयत्नपूवक स्टूल पर चढती है। कैलेंडर का पुराना पन्ना फाडती है। और स्टूल खिडकी के पास रखकर फिर से बैठ जाती है। तभी नाना अपनी धोती की चुन्नट ठीक करते हुए आते हैं।]

नाना मैं कोई बहुत बूढा हो गया हू, ऐसा मत समझ !

नानी मैं कुछ भी नही समझती

नाना नही, अभी जो तू कह रही थी

नानी मैंन कब कहा, आप बुड्ढे हा गए हैं ? उल्टे आपन ही पहले मुझे *बुढिया* कहा !

नाना फिजूल कुछ न कुछ उल्टा सीधा बोलती रहती है तू ! मैंने कब कहा, तू बूढी है ?

नानी आप वह भी लें मुझे बुढिया तो मुझे बुरा नही लगना मैं हू ही बुढिया !

नाना कोई बुढ़िया वुढिया नही है बुढ़िया किसलिए ?

नानी किसलिए क्या ? मैं हू ही बुढिया !

नाना बस ! यही बुरी आदत है तेरी ! -- कोई एक बात ल के बैठ जाएगी कि बस ! उसे पीसती बैठेगी । आज की नही, पुरानी आदत है तेरी बूढी हो गई पर ।(नाना जरा गुस्से मे चक्कर लगाने लगते हैं । अचानक उनका ध्यान दीवार पर लगे कलेंडर पर जाता है । कलेंडर की तरफ घूरते हुए) महीना खत्म ? (एकदम से ध्यान मे आता है, कैलेंडर का पन्ना फाडा गया है ।) पन्ना किसने फाडा ?

नानी क्या कहा ?

नाना कैलेंडर का पन्ना किसन फाडा ?

नानी मैंन

नाना क्यो ?

नानी क्यो मतलब ? मैंन फाड दिया तो क्या हो गया ?

नाना पर तेरा हाथ कसे पहुचा ?

नानी स्टूल पर चढ गई थी ।

नाना (चिढाते हुए) स्टूल पर चढ गइ थी ! शरम नही आती कहत हुए ? (नानी देखती रहती है) स्टूल पर चढने को तरा क्या अडा हुआ था ? एक बार गिरकर घुटना तोड बठेगी तब समझेगी ! पहले से ही तेरा यह पैर इतना बडा बडा !

नानी (चिढकर) रहने दीजिए मेरा यह पैर इतना वडा बडा ! आपका तो मोर की तरह है ना !

नाना (हसकर ताली बजाकर गाने लगते हैं) नाच रे मोरा नाच ! अबुआ के वन म नाच !

नानी (हसती है) अब छोटे बच्चो की तरह नाचो पर नाचते हुए

अपना घुटना सभालना !

नाना पर मैंने जो कहा, उसमे कुछ झूठ है क्या ?

नानी क्या ?

नाना स्टूल से एक बार गिर पडती ता ?

नानी आपने जो गुसलखाने म गिरकर घुटना तोड लिया तब स्टूल पर चढे थे क्या ?

नाना तू भी ऐसी है कि कुछ न कुछ उल्टा सीधा बोलती रहगी पुरानी आदत है तरी

नानी (शरारत से) बूढी हा गई, अभी तक गई नही !

नाना अब मैंने नही कहा बूढी तुझे

नानी कह लो ता भी क्या ?

नाना पर मैंने नही कहा उल्टे तू ही उठत बैठते मेरे घुटन का मजाक उडाती रहती है। घुटने की हडडी क्या मैंन जान-बूझ कर तोडी है ?

नानी मैंने कभी मजाक नही किया

नाना खूब किया है घुटने पर जब स्टेनलेस की कटोरी लगी तो तूने यह भी कहा था, कटोरी दाल छौंकन के काम आती, घुटने पर क्यो लगा दी ?

नानी (हसती है) मैंने कब कहा था ? (फिर हसी आती है।)

नाना (चिढकर) हसती है, तूने नही कहा था ?

नानी कहा होगा कभी एक बार मजाक से पर फिर कभी मुह से नही निकाला मैंन उल्टे आप ही उठते बैठते

नाना मैं कुछ नही कहता बाबा ! तू मजाक उडाती है मेरे घुटने का मुसस मुडता नही दुखता है

नानी ओ हो ! दुखता है ? अभी तो नाच रे मोरा नाच कहकर नाचने जा रह थे (हसती है) नाचिए ना जरा !

नाना नहीं।

नानी नाचिए ना! ऐसा भी क्या?

नाना नही!

नानी अब नखरे मत करिए! एक बार नाचिए गाना मै गाऊ? नाच रे मारा

नाना नही! मेरा पैर दुखता है।

नानी (घबराकर) सच्ची, दुखता है?

नाना और नही तो!

नानी फिर आप नाचे किसलिए?

नाना कहा नाचा हू?

नानी मेरे सिर को साबुन मलने क्या आ गए?

नाना मैं कहा आया? तू ही कहती थी जरा बालो को अच्छी तरह साबुन लगाकर मल दीजिए ना! तेल नही जाता बालो से

नानी पर तेल गया कहा?

[नाना एकदम माथे पर हाथ मारते है। तभी दरवाजा खटकता है। नाना दरवाजा खोलते हैं। म्हादू नौकर आता है।]

नाना क्या है म्हादू?

[म्हादू कुछ बोलता नही। उसके मुह मे सदा पान-तम्बाकू का बीडा रहता है। तभी शायद वह एकदम बोल नही पाता। काम झटपट करने की आदत है। नाना नानी की गति जितनी धीमी है, उतनी ही इसके काम मे फुर्ती है। वह जल्दी से कमरे मे झाडू लगाकर अन्दर चला जाता है। उसके इस फुर्तीलेपन को नाना नानी देखते रह जाते हैं। म्हादू अन्दर चला जाता है तभी नाना-नानी एक-दूसरे की तरफ देखते हुए—]

नानी लग गई इसको झाड् !

नाना कालेज के दिना म मैं जब होस्टल मे था ऐसे ही झाड् लगाना था अपने कमरे मे

नानी पर कितने दिनो वाद ?

नाना (उसकी तरफ देखते रहते हैं, नानी साडी के पल्ले मे मुह छिपाकर हसती है।) कुछ न कुछ सुनने की तरी आदत ही है। (कमरे मे ही दो-तीन चक्कर लगाते हैं। एकदम दीवार पर लगी घडी की ओर ध्यान जाता है।) आज गुरुवार है ना ?

नानी हा ! क्यो ?

नाना (खुश होकर) घडी को चाबी देनी है।

नानी (उठकर) आप स्टूल पर मत चढिए, मैं देती हू चावी

नाना तू ? स्टूल पे चढेगी ?

नानी क्यो ? कभी स्टूल प चढी नही ?

नाना और मैं जैसे इस पूरे जनम मे स्टूल पे नहीं चढा !

नानी घर म माचिस खतम हो जाए और कहो 'ला दीजिए' तो कहगे पाव दुखते हैं। जीना चढा उतरा नही जाता और स्टूल पर

नाना आदत डालनी चाहिए यही सोचता रहा, घुटना दद होता है घुटना दद होता है, तो कभी स्टूल पर नही चढा जा सकेगा

नानी काई जरूरत नही है आपको स्टूल पे चढने की मैं चढती हू ! मैं चाबी देती हू

नाना नही, आज मैं चाबी दूगा।

नानी अब इस उम्र मे, यू बच्चो की तरह मत किया करो।

नाना मैं कुछ नही जानता, आज चाबी मैं दूगा।

[दोनो स्टूल पर चढने की तैयारी मे होते हैं कि जल्दी-

जल्दी म्हादू अन्दर से आता है और झट से स्टूल पर चढकर घडी की चावी कटकट घुमाने लगता है। नाना नानी उसकी तरफ दखत रह जाते हैं। म्हादू घडी का कवर बन्द करक नीचे उतरता है और जल्दी स अपने काम के लिए पुन अन्दर चला जाता है। नाना-नानी एक दूसर की तरफ देखत रह जाते हैं।]

नानी चलो अच्छा हुआ !

नाना यह साला बडा आगाऊ है ! इसे किसन कहा था चावी देने के लिए ?

नानी देने दो !

नाना दने कैसे दो ? कैलेंडर का पन्ना तू फाडे ! घडी की चावी यह दे ! फिर मैं क्या करू ?

नानी जरूरत क्या है आपको कुछ करने की ?

नाना इस तरह मेरा वक्त कैसे कटेगा ? दिन भर बैठा-बैठा क्या करू ?

नानी जरूरत क्या है आपको कुछ करन की ? आराम से बैठे रहा कीजिए।

नाना नही बैठूगा मैं आराम से नही बैठूगा। तू मुझे समझती क्या है ?

नानी तो यू कीजिए—

नाना क्या ?

नाना वालकनी की बल का लोटा भर के पानी डाल दीजिए।

नाना (हर्षित होकर) सच ! *आज किसी ने बेल को पानी नही दिया।*

[ऐसा कहकर नाना रसोईघर म जाते हैं। तभी पीछे से म्हादू आकर बालकनी के गमले म पानी डालता हुआ दिखाई देता है। नाना लोटे म पानी लेकर आत

है और खिडकी से म्हादू को देख लेते हैं। कुछ शर्मिन्दा होकर वही खडे रह जाते हैं। म्हादू, हाथ का खाली लोटा लेकर अन्दर जाता है और जाते जाते नाना के हाथ का भरा हुआ लोटा भी ले जाता है। नानी देखती रह जाती है।]

नानी क्या हुआ ?

नाना (गुस्से से) क्या हुआ, क्या ? कहे देता हू, इस उल्लू के पटठे का रौब नहीं चलने दूगा मैं—

नानी किसका ? (हसती है।)

नाना इस इस म्हादू का। सर फोड के रख दूगा साले का

नानी पर वह तो आपके आराम के लिए ही करता है ना ? (हसती है।)

नाना (उसकी हसी से चिढकर) हस मत, उल्टी खोपडी !

नानी होने दो, आप यू कीजिए

नाना क्या ?

नानी आज अच्छी धूप निकली है हम यू करते हे सभी रेशमी साडियो को धूप दिखाते हैं।

नाना मैं ? साडिया धूप मे डलवाऊ ?

नानी क्यो ?

नाना रेलवे म क्लास वन आडिटर था मैं ! तरी साडिया को धूप दिखाऊ ? रास्ता देख

नानी अच्छा ! मैं डालती हू धूप म, आप जरा वो ट्रक तो खीच देंगे ना ?

[नाना धीरे धीरे खाट की तरफ बढते ह। झुककर एक हाथ खाट पर रखते हैं। दूसरे हाथ स ट्रक खीचने ही वाले होते हैं कि तभी अदर से म्हादू आता है और झट से ट्रक खीच कर नानी के सामने रखकर अदर

चला जाता है। नाना पागल की तरह देखत रहते हैं। नानी मुह पर पल्ला रखकर हसती है।]

नाना (चिढकर) हस क्या रही है ?

नानी मैं कहा हस रही हू ? (मुह पर पल्ला रखती है लेकिन उसकी हसी काबू मे नहीं आती। नाना चिढे हुए इधर से उधर ओर-ओर से चक्कर लगाने लगते हैं। नानी ट्रक खोलती है। एक जरी की साडी निकालकर खिडकी और स्टूल पर फैला देती है।) यह साडी यह आप ही लाए थे ना ?

नाना (अभी भी गुस्से मे हैं।) मुझे नही पता !

नानी नही नही ! (चोरी से नाना की ओर देखते हुए) आप कहा लाए थे ? मेरे पीहर से आई थी

नाना हा हा ! पीहर से आई थी ! पीहर से सिफ तू आई थी और कुछ नही आया। कहती है पीहर से आई थी ! (नानी गदन नीची किए हसती है।) मैं मैं लाया था बनारस से।

नानी वही तो मैं कहन जा रही थी, पर आप तो कुछ सुनने के लिए तैयार ही नही। सवा सौ की है ना यह साडी ?

नाना सवा सौ क्या ? सऽऽवा सौ कह ! उस जमाने क सऽऽवा सौ !

नानी याद है, दीनू जब पैदा हुआ था तब की बात है ?

नाना या" ना रहन की क्या बात है ? (आगे बढ़कर ट्रक मे से एक और साडी उठाकर) यह यह साडी भी मैं लाया था।

नानी यह साडी नही, ओढनी है।

नाना (शरमाकर नीचे रख देते हैं।) होगी।

नानी यह साडी मैंने कभी पहनी ही नहीं। सोचा दीनू की बहू पहनगी

नाना पहनेगी ! पहनेगी ! दीनू की बहू जरूर पहनेगी ! सोचती रह !

नानी चिढाओ मत ! पहनेगी ! दीनू को एक बार यहा आ ता जाने दीजिए इस बार शादी किए बिना नही छोडूगी। अब इस घर म बहू आनी ही चाहिए। मेरे बाल धोने को बाल सुलझाने को इस उम्र म भी सब कुछ अपने आप करो अब मुझसे नही होता।

नाना हा, हा ! तुझसे नही होता। होगा कसे ? नाना जो है !

नानी किसलिए ?

नाना तेरे बाल धोने को तेरे बाल सुलझाने को

नानी ला दनो ! एक बार भूल से बालो को साबुन क्या लगा दिया कि बस ! जनम भर उसी की रट लगाए रहेंगे यह सुनते सुनत मेरे बाल झडने लगेंगे

नाना झडने दे ! झडने दे ! तल मलने के लिए नाना तो है ही ! पर सुन, बाल झडने से पहले बेटे की शादी तो रचा ले !

नानी वो तो रचाऊगी ही, छोडूगी थोडे ! फिर जरा बडा फ्लैट लेना पडेगा।

नाना सब कुछ ले लेंगे, पहले जरा दीनू को तो आ जाने द अमेरिका से।

नानी आएगा ही, आए बिना कैसे रहेगा ?

नाना लकिन कब ? आठ साल तो हो गए, कब आएगा ?

नानी (चिढकर) आ जाएगा, आप ऐसा वैसा कुछ मत बोलिए आएगा ही, आए बिना कैसे रहगा ? वहा किसके लिए रहगा ? कौन है वहा प्यार से उसकी देखभाल करने वाला ? वहा अमेरिका मे है क्या ?

नाना है क्या, यह तेरे कहने से क्या ? यह तो उसे दीनू से पूछना चाहिए।

नानी (जरा चिढकर) पर यह सब किया तो आप ही का है ना ?
नाना तू यह दोप बार बार मेरे सिर मत थोप !
नानी दोप आपको कैसे ना दू ? आपने ही उसे अमेरिका भेजा।
नाना भेजने का मतलब हमेशा के लिए वही रह जाने को तो नही कहा था मैंने ?
नानी पर मैं पूछती हू, भेजने की जरूरत क्या थी ? इजीनियर बन गया था यहा काफी था वहा की पढाई का कौन मोती लग थ ?
नाना अरे ! पर मैंने क्या बुरा
नानी अब आप चुप रहिए। अच्छी भली नोकरी थी उसकी यहा वह आपने छुडवा दी उसे वहा इतनी दूर भेज दिया।
नाना लेकिन क्या ? इसीलिए ना कि जब वहा से लौटेगा और अच्छी नौकरी मिलगी मोटर लेगा बगला लेगा और
नानी इस और और ने ही सब सत्यानाश किया है। और और का भूत एक बार सवार हो जाए तो फिर किसी चीज का कोई अन्त नही। आखिर हर चीज की कोई मर्यादा होती है। थाडे म सुख मानना आपकी इस और और ने लीजिए अब ...ठ साल हो गए ! वो वहा और और पैसा कमा रहा है यहा आने का नाम नही !
नाना भगवान जाने, वहा शादी कर बैठा है या क्या
नानी अब एसा अशुभ मत बोलिए। वहा शादी नही करेगा वो। उसने वहा की लडकी स शादी कर ली तो मुझसे निर्वाह नही होगा। मरी बहू मेरे पोती पोते मेरे ही कुल के लगन चाहिए।

[म्हादू अपनी हाफ पैंट से हाथ पोछता हुआ बाहर आता है और दरवाजा खोलकर निकल जाता है। नाना-नानी उसकी तरफ देखत रह जाते हैं।]

नाना यह आदमी सुखी है। काम करना और पेट भरना ! जी को किसी तरह का कोई जजाल नही, हमारी तरह

नानी औरत के वच्चा होने वाला है इसकी।

नाना वा तो होगा ही न होने की क्या बात है ? जहा देखो वही जल्दी जल्दी !

नानी आपने जल्दी म कौन सी कमी की थी ?

नाना ओ हा हो ! अच्छा हुआ ता भी जो शादी के सात साल तक कुछ नही हुआ। तुझे ही जल्दी थी तभी पूजा, उपवास, मन्नतें ! सात साल बाद दीनू हुआ और कहती है, मुझे जल्दी थी !

नानी रहन दो ! आपको दिए तो सही ना दो लडके ?

नाना दिए ! एक अमेरिका बैठा है ! दूसरा फौज मे काश्मीर आज अपनी मालू होती तो कम स कम वह तो हमारा साथ देनी ! नद्र के ऊपर से जल्दी जल्दी आई और जल्दी जल्दी चली गई

[कुछ क्षण बिल्कुल शाति।]

नानी आप आज पहले दीनू को पत्र लिखिए।

नाना क्या ?

नानी लिखिए एकदम चला आ ! हमे तेरी अमेरिका की नौकरी नही चाहिए पैसा नही चाहिए यहा जो रूखी-सूखी मिलेगी वही बहुत है। पैसे के लिए छाती फटने तक दौड-धूप करने की क्या जरूरत है ? कहिए, तुझे हमारी नजरो के सामने होना चाहिए !

नाना तू कहती है तो एक बार और लिख देता हू पर तू जानती है, कितनी बार यही बात उसे लिख चुका हू फोन पर हर बार कहता हू पर उसका वही एक ही जवाब हिदुस्तान आकर खाऊ क्या ? पत्थर ?

नानी (चिढकर) हा, हा कहना यहा आकर पत्थर ही खा लेना। हम भी तो पत्थर खाकर जी रहे हैं ना ? हमारे पूवज आखिर क्या खाकर जिए यहा ?

नाना उसका कहना है उसके हिदुस्तान आने से बडी बात क्या हो जाएगी ? कहता है आप बीमार पडें तो नस रख लीजिए नस के पैसे भेज दूगा कीमती टानिक लीजिए दवाइया लीजिए पसे भेज दूगा। रोज फोन पर बात कीजिए फोन के पैसे भिजवा दूगा इसीलिए तो उसन दिया है ना यह फोन ?

नानी *आग लगे एस पैसे को ! फिर ऐसी बात करे तो मुह तोड* दीजिए उसका। बहुत सुनी हैं हमने उसकी, पर अब मैं एक नही सुनने की उसकी। आप उसे लिखिए फौरन आ जाए यहा। कहिए, तरी और नदू की शादी अब एक साथ करेंग। यह घर अब भर जाना चाहिए। बहुआ के जापे पोती पोता के खेल उन्ह कौवे चिडियो की कहानिया सुनाना सुनाना तो एक तरफ पता नही आजकल ये कहानिया कहा गुम हो गइ (*नाना खिडकी से सर टिकाए हुए दूर कहीं देखते रहते हैं।*) खाली घर काटने को आता है वक्त बिताए नही बीतता आप मेरे मुह की तरफ दखत रहत है मैं आपके मुह की तरफ वही दाल चावल पकाना खाना है सिफ इसी लिए खाना यह चाहिए, यह नही कह कर खान वाला कौन है यहा ? वह नदू कम-स कम वह तो यहा नौकरी करता वह भी सना म चला गया विमान उडाता है देश की सेवा कर रहा है यहा बुढापे मे हमारी सवा करनेवाला काई नही उल्टे हमारे जी को चिता ही चिता ! सुख एक बच्चे से भी नही !

[*बोलत बोलत नानी का गला रुध जाता है। आखो पर साडी का आचल लगाकर रोती है। नाना खडे*

खडे उसके वालो पर हाथ फिराते हैं। मारा घर उदास सा लगता है। इस वातावरण को कैसे बदलें—सोचकर नाना इधर उधर देखने लगते हैं। इतने म बालकनी पर एक कौवा आकर बैठता है और काव काव करता है। नाना-नानी क्षण भर कौवे की तरफ देखते रहते हैं।]

नानी (उदास होकर) यहा कौन आन वाला है बाबा !

नाना (जरा दिखावटी उत्साह से) जरूर आन वाला है। कौवे-कौवे तू उड जा ! *(कौवा उड जाता है। नाना दिखावटी उत्साह से तालिया बजाते हैं और कहते हैं)* देखा ? कौवा उड गया नानी ! कोई न-कोई आएगा जरूर काई-न कोई आएगा, नानी

नानी (भावहीन दृष्टि से) कौन ? कौन आएगा ?

नाना गीनू आएगा शायद अमेरिका से या अपना नदू काश्मीर से (तभी फोन बजता है। नाना फोन की तरफ बढते हैं।)

नानी किसका फोन है ?

[नाना फोन उठाते हैं। फोन उठाते ही बायी तरफ पारदशक जाली के परदे मे एक कोने मे हरा प्रकाश जल उठता है और उस परदे के पीछे फोन पर एक आठ दस वष की लडकी शर्मिला—फोन पर दिखाई देती है।]

शर्मिला दाडकर बोल रहे हैं क्या ?

नाना दाडेकर ? (क्षणभर चकित होते हैं और—) हा हा, दाडेकर

नानी दाडकर कौन ?

नाना (फोन पर हाथ रखकर नानी से) राग नम्बर है। जरा मजा

करत है ! (फोन पर) हा हा, दाडेकर, तुम कौन ?

शर्मिला मैं शर्मिला

नाना शर्मिला टैगोर ? (हसते हैं।)

शर्मिला अर नही ! शर्मिला दीक्षित।

नाना शर्मिला दीक्षित अच्छा अच्छा !

नानी कौन है ?

नाना (फोन के बाहर) शर्मिला दीक्षित

नानी यह कौन है ?

नाना एक लडकी

नानी क्यो बोल रहे हो उससे ? न जान, न पहचान !

शर्मिला (हडबडाकर) किससे बाल रह हैं आप ?

नाना तेरी दादी से दादी मतलब, वैसे बहुत बूढी नही है (हसते हुए) अभी दात नही गिरे उसके !

शर्मिला (हसकर) सच ? पर बुढिया की तरह बाल सफेद हैं कि नही ?

नाना (नानी को गौर से देखते हुए) हा हा बाल तो काफी पक गए हैं !

नानी किसके ?

नाना (रिसीवर पर हाथ रखकर) मेरे !

नानी यह सब क्या हो रहा है ?

नाना (रिसीवर पर हाथ रखकर) जरा मजा टाइम पास तू दादी बन गई।

नानी किसकी दादी ?

शर्मिला पर आप कौन ?

नाना मैं ? वो ! अरे मैं तेरा दादा !

शर्मिला (हसती है) दादा ! कितना मजा !

नाना कैसा मजा ?

शर्मिला आज से मेरे दो-दो दादा !

नाना दो ? (जरा चुप हो जाते हैं) सुन ! मेरा फोन नम्बर लिखेगी ?

शर्मिला क्या है ?

नाना लिख तो सही !

शर्मिला हा, बताइए (पसिल उठाकर लिखती है)

नाना लिख 582946, लिख लिया ?

शर्मिला हा।

नाना तेरा क्या नम्बर है ?

शर्मिला 585352 (नाना लिख लेते हैं।)

नाना अब क्या करना है, बताऊ ? रोज दोपहर को मुझे एक बार फोन करना दोपहर को घर होती है ना ? स्कूल कब जाती है ?

शर्मिला स्कूल सुबह ।

नाना बहुत अच्छा फिर रोज दोपहर को मुझे फोन करेगी ना !

शर्मिला क्यो ?

नाना यू ही, जरा मजा आएगा।

शर्मिला इसमे मजा कैसा ?

नाना (गम्भीर होकर) कैसा ? अरे तेरा दादा हू ना ? सुन, मैं ठहरा बूढा (भावावेग से) यहा कोइ छोटा बच्चा नही है मुझ से बात करने को किसी से बात करके अच्छा लगता है बोलेगी ना ?

शर्मिला हा !

[शर्मिला के पीछे उसके दादा खडे हैं। वह उससे पूछते है, "किससे बात कर रही है।" शर्मिला का उत्तर—'राग नम्बर है।' दादा—"फोन नीचे रख दो।"

शर्मिला फोन नीचे रख दती है। कौन का हरा प्रकाश
व द।]

नाना हलो हलो ह लो (कहते हुए फोन रख देते हैं।)

नानी कौन थी वा ?

नाना कितनी प्यारी बच्ची थी !

नानी कह ता ऐसे रह हो, जैसे आखा से देख ली हो !

नाना आवाज से पता नही चल जाता ? शर्मिला दीक्षित

नानी उम्र कितनी है ?

नाना होगी आठ दस साल।

नानी धत् तरे की ! मैंन समझा शादी लायक है। सोचा दीनू के लिए
जान पहचान कर रह हो—

नाना छोटी सी लडकी थी रे ! उससे बात करत हुए लग रहा था
लग रहा था, मैं अपनी ही पोती से बात कर रहा हू दीनू
की लडकी से दीनू की शादी बीसवें साल म हो जाती तो
अब उसकी लडकी इतनी बडी ना होती ?

नानी लडकी क्यो ? अच्छा भला लडका होता !

नाना दाना लडके सता रहे हैं। तब भी लडका का शौक गया नही
तरा ! सच, उसे यहा लाना चाहिए

नानी दूसरे का बच्चा हम कैसे ला सकते हैं ?

नाना लाना, यानी रख तो नही लेंगे उसे रहेगी घटा दो घटे
खेलेगी खा पीकर चली जाएगी।

नानी पर लाएगा कौन ? आपसे जीना चढा उतरा नहीं जाता
घुटने म दद होता है।

नाना तो भी जाऊगा मैं उस बच्ची को लेकर आऊगा पता पूछ
लेना चाहिए था मुझे उसका

नानी उस वक्त पूछ लेना चाहिए था हर काम मे जल्दबाजी रहती
है आपको

नाना रुक, फोन करता हू, उससे पता पूछता हू ।

[फोन करते हैं। कोने मे हरा प्रकाश। शर्मिला के दादा फान उठाते हैं।]

दादा (रोबीले स्वर मे) हलो कौन ?

नाना (हडबडा जाते हैं) शर्मिला है क्या ?

दादा शर्मिला कौन ?

नाना (कुछ घबराकर) शर्मिला टगोर

दादा (चकित होकर) शर्मिला टैगोर ? वो यहा कहा ?

नाना (ध्यान मे आने पर) टैगोर नही, शर्मिला नीगित ।

दादा आप कौन ?

नाना (हडबडाकर) मैं मैं उसका दादा ।

दादा (चकित होकर चिल्लाता है ।) दादा ? आप कैसे उसके दादा ? मैं उसका दादा वा वा !

[नाना एकदम घबरा जाते हैं और फान नीचे रख दत हैं। कोन मे अधेरा ।]

नाना (घबराकर) अरे बाप रे !

नानी क्या हुआ ?

नाना उसके दादा न ही फोन उठा लिया ।

नानी क्या कहा ?

नाना कहा मैं उसका दादा आप कैसे उसके दादा ?'

[घबराई हुई अवस्था मे ही नाना कमरे मे चक्कर लगाते है। अधेरा। फिर प्रकाश। वही स्थल। कुछ ही घटे बाद। दरवाजा खटकता है। नाना दरवाजा खोलते हैं। दरवाजे पर पोस्टमैन। नाना पत्र लेते है।]

नानी (बाहर आती हुई) किसकी चिटठी है ? दीनू की ?

नाना (लिफाफा फाडते हुए) नद का लगता है

नानी अमेरिका स दीनू की चिटठी आए कितने दिन हो गए

नाना चौदह दिन ।

नानी आज रात आप उसे फोन कीजिए इतने दिन कभी नही लगाता वो चिट्ठी म पढिए पढिए गुजिया नदू ने खाई कि नही ?

नाना (आखा पर चश्मा लगाकर पत्र पढते हैं।) पूज्य नाना, सप्रेम नमस्कार। आपकी चिटठी मिली। गुजिया का पामत दो दिन हुए मिला। गुजिया बहुत अच्छी बनी थी, इधर सबको बहुत अच्छी लगी। पर मेरे हिस्से ज्यादा नही आई। यहा की मित्र मडली ने पूरी की पूरी गुजिया एक ही बठक म उडा डाली।'

नानी (माथे पर हाथ रखकर) बावला है यह भी ! गुजिया का डिब्बा दोस्ता क आगे रखने की क्या जरूरत थी ? अपन कमरे मे छिपाकर नही रख सकता था ?

नाना मा का गुण बटे म नही आया ! (पत्र पुन पढते हैं) पर नानी को कहिए अब और गुजिया न भेजे। क्योकि अगले महीने मैं ही छुटटी पर आ रहा हू। वही खाऊगा, खूब खाऊगा।

नानी गुजिया तो उसके प्राण है! और दीनू को मीठी रोटी कौन बनाकर खिलाएगा उस वहा अमेरिका म—(यह सब नानी अपने आप बोलती रहती है और नाना उसकी तरफ देखते रहते हैं।)

नाना (पत्र आगे पढने लगते हैं) न्यूयाक से दीनू का पत्र आया था वह वहा ठीक ठाक है—(पत्र ध्यान से देखते हुए) यहा पर कुछ लाइनें मिटाई हुई हैं उसने दीनू क सबध म कुछ लिखा था, पर फिर मिटा दिया है

नानी पढकर देखिए पढकर देखा जाता है तो (मिटी हुई लाइनें पढने का प्रयत्न करते हैं लेकिन उनसे पढा नहीं जाता।) मैं

पढती हू आपको कभी ठीक से पढना आया भी है ? (नाना पत्र नानी को देते हैं। वह चश्मा ढूढ़ती है। यह ले कह कर नाना अपना चश्मा उसे देते हैं। वह लगाकर नानी पत्र मे मिटी हुई लाइनें पढने का प्रयत्न करती है पर) एक अक्षर भी समझ म आए तो शपथ ! दीनू की तबीयत क बारे म कुछ लिखकर मिटाया लगता है।

नाना (सोचते हुए) तबीयत ? उसकी शादी क बारे म तो कुछ लिखा नही है ?

नानी ऐसा किसलिए कह रह हैं आप ?

नाना यू ही

नानी 'नानी' शब्द लिखा है वहा पर ?

नाना छे ! नही !

नानी नही ! हम बताए बिना दीनू ऐसा नही करगा। पर आप आज रात उसे फान कीजिए यूयाक। अभी क्यो नही करते ?

नाना रात का ही करेंगे, ज़रा जागेंग आज। रात को दर से करने पर जल्दी मिलता है फोन। सुनाई भी ठीक से देता है।

नानी पर याद रखिए नही तो आप भूल जाते है और नदू को भी लिखिए छुट्टी पर आते वक्त विमान से आने की जरूरत नही रल स ही आए (बिल्कुल दीनू की तरह दिखने वाला एक युवक विनय भोले दरवाजे मे खड़ा दिखाई देता है। उसे देखते ही नानी हडबडा जाती है और उत्तेजित होकर—) अर दीनू !

नाना (एकदम घबराकर) कौन ? कौन ?

नानी (हसती हुई) भूल हो गइ। मुझे बिल्कुल दीनू की तरह दिखाई दिया लगा जसे दीनू ही आया है।

नाना आप कौन ?

विनय यहा श्री करदीकर रहत हैं क्या ?

नाना नही ! मैं अम्यकर आइए आइए आइए।

विनय आय एम सारी माफ कीजिए ? (हडबडाकर वापस जाने के लिए घूमता है। तभी)

नाना जाइए ना ! अन्दर आइए।

[विनय को आग्रह करके अदर लाते हैं और वठन के लिए कुर्सी देत है। बहुत वर्षों के बाद जस दीनू घर आया हो समझकर नाना-नानी उस घेर लत है। उन दोनो को ही कोई बात करने के लिए या अपना एकान्त दूर करने के लिए कोई न कोई चाहिए होता है और वह मिल जाने स नाना नानी खुश हो जाते है। वह उठकर चला न जाए इस डर से वे विनय को वातो मे लगाए रखते हैं।]

विनय (जरा शरमाते हुए) माफ कीजिए मैं समझा यहा करदीकर रहत हैं। इसलिए

नानी करदीकर कौन ? (जरा सोचती है)

नाना अरे वे वे हाग

नानी पर व तो रायलकर हैं ना ?

नाना फिर वे

विनय (जेब से विज्ञापन की कटिंग निकालकर पढते हुए) सी० वी० करदीकर जयमगल

नानी यह भी जयमगल बिल्डिंग ही—

विनय जयमगल न० तीन—

नाना यह एक नबर है सडक के उस तरफ न० तीन—

विनय ठीक ठीक थैंक्यू (जाने के लिए उठता है।)

नाना बठो बैठो ना ! (उसका कधा पकडकर बिठाते हैं) करन्दीकर आपके रिश्तेदार हैं ?

विनय नहीं नहीं ! उन्होने विज्ञापन दिया था, पेइगगैस्ट के लिए

नाना वे करत क्या हैं ?

विनय क्या पता ?

नाना हम भी कुछ पता नही नए-नए लोग आकर रहते हैं। पेइग-गेस्ट कौन है ? (नानी अन्दर जाती है)

विनय मैं ही ! मुझे ही पइगगेस्ट एकमोडेशन चाहिए।

नाना आपका नाम क्या है ?

विनय विनय भोले।

नाना एक भोले रेलवे आडिट मे थे उन्नीस सौ वीस के आस-पास

विनय हमारा रेलवे मे कोई नही

नाना अच्छा ! माता पिता कहा रहत हैं ?

विनय बेलगाव। वहा हमारी कपडे की दुकान है।

नाना आप क्या करते है ?

विनय मैं यहा इजीनियरिंग कालेज मे हू फाइनल म।

नाना अच्छा अच्छा ! और आगे क्या अमेरिका वगैरह जाना चाहते हैं ?

विनय नही।

नाना (आश्चय से) क्यो ?

विनय वहा है क्या ? किसलिए जाया जाए !

नाना (जोश मे आकर) व्हैरी गुड ! आय एम प्राउड आफ यू !

[एकदम खडे होकर उसे थपकी दते है। विनय को कुछ समझ नही आता। वह हडबडा जाता है।]

विनय क्यो ? क्या हुआ ?

नाना कुछ नही। कुछ खास नही। (ध्यान मे आता है कि उन्होने जरूरत से ज्यादा उत्साह दिखाया है।) वैसे होता क्या है आजकल जो कोई उठता है अमेरिका चला जाता है इगलैंड चला जाता है कैनडा चला जाता है जमनी चला

जाता है वाद म सब वही रहने लगत हैं स्थायी हो जात हैं और हम यहा ब्रेनड्रेन ब्रेनड्रेन चिल्लाते रहते हैं।

विनय विदेश जाने वाले सभी लोगा का ब्रेन खास होता हो यह बात नही पर चिल्लान की हम आदत है यह सच है

नाना (एकदम खुश होकर) यू आर राइट ! एब्सल्यूटली राइट !

विनय और मैं कहता हू ब्रेनड्रेन कैसे हो सकता है ? यहा रहन वाला का भी तो ब्रेन है ! उनके ब्रेन का उपयाग कर लीजिए, काफी है !

नाना यू आर राइट ! एक बात कहू ? आप (कुछ रुककर) आपको मैं तू कहू तो चलेगा ना ?

विनय हा, हा क्यो नही ? आपके तो बच्चो की तरह हू मैं

नाना गुड बाय ! सच बात कहू तो तू इगलैंड-अमेरिका मत जाना। यही अच्छी-सी नौकरी मिल जाएगी तुझे अपने देश म भी कुछ कम प्रगति नही हो रही अब काफी कुछ हो रहा है यू ही चिल्लाते रहते हैं हम ये नही हुआ वो नही हुआ चिल्लाना तो अब हमारा राष्टीय धधा बन चुका है दूसरो का नाम ले लेकर चिल्लाते रहगे खुद कुछ करें कराएग नही अपन यहा भी तो बहुत-सी योजनाए बन रही हैं तू इजीनियर हो जाएगा तो तुझे यहा नौकरी मिल जाएगी और न भी मिली तो तू हिम्मत दिखाना अपना कोई धधा खोल लेना अपने साथ दस बीस और को भी नौकरी देना अरे आखिर हम मिले मिले मिले, यानी कितना ? मिलन की भी कोई मर्यादा होनी चाहिए कभी ता सब्र करना पडता है (नाना यह बातें क्यो कहे जा रहे हैं समझ मे न आने पर विनय चकरा रहा है।) बच्चो को वहा मनभाती ऐश और पसा मिलता रहे और बुड्ढे मा बाप यहा बिना किसी सहारे के जिदगी की घडिया गिनते रह

विनय आपके बच्चे यहा हैं ?

नाना छोटा एयरफोर्स म आजकल काश्मीर पास्टिड है बडा अमेरिका है इजीनियर

विनय अमरिका म कहा ?

नाना न्यूयाक। आठ साल हो गए

विनय यहा नही आएगे ?

नाना आएगा आएगा वहा रह के क्या करेगा ? आना तो पडेगा ही उसे आखिर वडा लडका है (जरा रुककर) तुम कितने भाई बहन हो ?

विनय मैं और एक मेरी बहन (तभी नानी चाय के प्याले लेकर आती है।) आपने चाय की क्यो तकलीफ की ?

नानी इसम तकलीफ की क्या बात है ? पीते हो ना चाय ? या काफी बनाकर लाऊ ?

विनय नही नही पीता हू चाय लेकिन आपने यह इतनी तकलीफ

[विनय नानी के हाथ से ट्रे ले लेता है। मेज पर रखता है और सबको कप देता है।]

नाना तुम लो ! तुम लो ! (चाय पीते हैं।)

विनय (चाय का पहला घूट लेकर) वा ! चाय तो फर्स्टक्लास बनी है।

नानी (खुश हो जाती है, उसे एकदम गुजिया का ध्यान आता है।) जरा रुको, गुजिया लाती हू गुजिया अच्छी लगती है कि नही ?

विनय गुजिया ? वाह ! मुझे बहुत अच्छी लगती है मेरी मा भी बनाती है।

नानी हमारा छोटा बेटा नटू है ना ?

विनय काश्मीर जो रहता है वो ?

नानी आप उस जानत हैं ?

विनय नही, इन्हान अभी बताया

नानी गुजिया उसके ता प्राण हैं ! अभी लाती हू ।

[पर घसीटती हुई अन्दर जाती है ।]

नाना यहा सिफ हम दोना हो हैं छोटा लडका नट्टू काश्मीर बडा दीनू अमरिका हम ता अब यह घर काटने का आता है ! जि दगी भर इसान मरमर मेहनत करता है आखिर किसके लिए ? अपन बच्चो क लिए ही ना ? जी चाहता है बच्चे बडे हा उनकी शादिया हा आगे उनक बच्चे हा वो दादा दादी स हठ करें—खेलें मस्ती करें—वे भी अपनी आखा के सामन बडे हा—वह जो कली होती है ना कली !—कैसे खिलती है पखुडी पखुडी करक—पहले बाहर की पखुडिया खिलती हैं फिर अन्दर की फिर और अन्दर की पखुडिया खिलती हैं—जी चाहता है अपने कुल का फूल भी अपनी आखो के सामन इसी तरह खिल—लेकिन हुआ ये—

[तभी नानी गुजिया लकर आती है और नाना चुप हो जात हैं ।]

नानी गुजिया बनाने मे काफी मेहनत लगती है यह कोई नमकपारे नही जो काटे और घी मे डाल दिए । इसीलिए ता कोई मन स खाए और मागकर ले ले तो अच्छा लगता है नही तो क्या ? इतन शौक से बनाओ और खान वाला कोई होता ही नही (वह लेकर खाना शुरू करता है) अच्छी लगी ?

विनय वाह ! एकदम खस्ता बनी है !

नानी खाओ, और चाहिए ता लाती हू ? क्या कह रही थी ! हा ! नट्टू को कुछ दिन हुए डिब्बा भर क गुजिया भजी वहा उसके दोस्तो का तो बहुत ही अच्छी लगी । (हसती है) अच्छा है ! चार जनो ने चखी तो सही ! आज आपने खाई,

नहीं बहन की—
अभी नहीं ! देख रहे हैं मनपस द लडका भी तो मिलना चाहिए ना !
उम्र कितनी है ?
छब्बीस साल—यहा मेरे मामा हैं वे देख रह है पर हमारा दीनू है शादी लायक, इक्कत्तीस साल का है।
पर वो अमरिका म
लेकिन वा आन वाला है आना ही है उस।
दिखने म तुम जैसी है ?
मुझस अच्छी है।
तब तो चलगी हमारे दीनू को (नाना से) आज रात फोन करना है उसे, याद है ना ? इसक बारे म भी जिक्र कीजिए ! उस कहना
(नानी को रोकते हुए) तू जरा रुक ह !
क्यो ?
(उसे हाथ से ही रुकन को कहते हैं) मैं यह कह रहा था तू पइगगस्ट होकर रहने आया है ना ?
कहा ?
उन करदीकर क यहा !
करन्दीकर कौन ?
(बोर होकर) तू जरा रुकेगी ? (विनय से) मैं क्या कह रहा था तू उन करदीकर क यहा पेइगगस्ट हाकर रहन वाला है ना ?
हा। पर दखूगा पहल जाकर जगह वगैरह—
वहा तुम्हे क्या क्या सुविधा मिलगी ?
सुबह चाय ब्रेकफास्ट नहान क लिए गम पानी !
बस ? और पस कितन लेंगे ?

विनय सौ एक रुपये शायद थोड़े ज्यादा ही

नानी कितनी महगाई है दखो ! दीनू हास्टल म रहता था तो दो ट,इम का खाना सत्तर रुपये म और उस पर भी इतवार की फीस्टे !

नाना (बोर होकर) तू (विनय से) रुक जरा ! मैं क्या कह रहा था तू यही क्या नही रहता ? ब्रेकफास्ट दोपहर का खाना रात का खाना सात वक्त दूध

नानी वह भी बादाम वाला ! आजकल दूध के लिए बादाम केसर तो पिसा पिसाया मिलता है मरे पास है डालो बस दूध तैयार ! पहले कैस था ? बादाम छीला उन्ह दूध मे उबाला केसर लाओ।

नाना (उसे रोकते हुए) तू जरा रुक ! (विनय से) और इस सबके लिए तू मुझे एक पैसा भी मत देना !

विनय (चकित होकर) मुफ्त ?

नाना बिल्कुल मुफ्त।

विनय इमस आपको क्या फायदा ?

नानी तू हमारा तीसरा बेटा है तुझसे थोड़ी रौनक हो जाएगी यहा भी।

नाना (नानी से) तू जरा रुक ! (विनय से) तुझ जैसा ब्राइट लडका परदेश जान की इच्छा ही नही जिस इतना अच्छा स्वभाव तरा साथ मिलेगा हम कल जब तू बडा इजीनियर हो जाएगा हम गव स कह सकेग वो यही पढता था।

नानी और तो क्या ? हम दोनो का बुढापा। हम म स किसी न भी आखें मीच ली तो झट स चार लोगो का इकट्ठा करन के लिए तो कोई होना चाहिए।

नाना (चिढकर) तू अब जरा चुप रहगी ? उसक लिए कोई नही चाहिए हमे अभी कोई नही मर रहा

किसका क्या पता ?
(चिढ़कर) तू यह बीच-बीच म मत बोल !
मैं अ दर ही जाती हू (कप उठाकर अ दर जाती है)
मैं बता दूगा आपको बाद म पर आपके पास जगह कितनी है ?
इतनी ही ! हम दानो जगह का करेग क्या ? कल जब दीनू आ जाएगा, नदू आ जाएगा, बडी जगह ले लेगे। पर यहा तुम्हे तकलीफ बिल्कुल नही होगी एक नई काट लाकर लगा दता हू इसकी काट रसोईघर म लग जाएगी बडी है रसोई ! और नानी तुझे ऐसा खाना खिलाएगी
(बाहर आती है) तुझे क्या चाहिए क्या नही, उतना बता बस ! यहा तो कोई एसा कहन वाला होना चाहिए मेरा यह पाव ही एसा है, मैं कोई थकी नही । (हसती है)
(बेचनी से हसता है, छुटकारा पाने के लिए) अच्छा, चलता हू
हमेशा आता हू' ऐसा कहा करो।
हा अच्छा 'आता हू' मैं।
इतनी क्या जल्दी है जाने की ? बठो थोडी देर !
नही (घडी देखता है) अब चलना चाहिए !
अच्छा अच्छा ! अब तू आएगा कब यह बता। कल स ही आ जाना।
बताऊगा मैं आपको—
हमारा फोन नम्बर लिख ल। (विनय जेब से कागज निकालता है)
यहा फोन भी है ! तुझे किसी को करना हो तो—
582946। (विनय लिख लेता है) फोन करना। नही तो खुद ही चल आना। थोडी देर गप्पें मारते बठेंगे।

विनय आऊगा, आऊगा। जाता हू मा जी ! (नाना-नानी 'आना-आना' कहते हैं, विनय नमस्कार करके चला जाता है)

नाना (उसी की दिशा मे देखते हुए) बिल्कुल अपने दीनू की तरह दिखता है ना ? यह जरा दुबला है उसस

नानी दुबला क्या दीनू भी ऐसा ही है।

नाना (उदास होकर) हा है ! उसे देखे आठ साल हो गए। यह लडका यहा रहने आएगा तो अच्छा हो जाएगा रौनक हो जाएगी घर म ! बातचीत का रुख कुछ बदल जाएगा।

नानी वो जरूर आएगा यहा।

नाना क्यो ?

नानी अरे ! आजकल कौन मुफ्त म रहने मुफ्त मे खाने को देता है ?

नाना लेकिन अच्छा दिलचस्प लडका है आज अपनी मालू होती तो जवाई बना लेता इस

नानी जाने दो ! उसकी बहन दिखने मे अच्छी होगी तो बहू बना लेंगे दहेज वहेज कुछ नही लेगे पर शादी शान से करेग। (एक जरी की साडी उठाते हुए) यह साडी मैं एक बार शादी म पहनूगी और फिर दीनू की बहू को दे दूगी यह दूसरी नदू की बहू को—और यह—

नाना सबका सब कुछ देते देत सास के तन पर भी कुछ रहेगा या नही ?

नानी (अपने मे ही मुस्कराकर एक दो क्षण देखती रहती है) बचपना गया नही अभी आपका। वह विनय जब यहा रहने आएगा तो उसक सामन ऐसा अनाप शनाप मत बोलिएगा।

नाना उसे आने तो दे।

नानी वो जरूर आएगा मे लिखकर देती हू।

नाना बहुत अच्छा लडका है। कहता है इजीनियर होने के बाद

विदेश नहीं जाऊगा रक्खा क्या है विदेश मे। अपना दीनू देखो ।
दीनू भी एसा ही था। वह नौकरी छोडकर जान को तैयार कब था ?
(चिढकर) यानी मैंने उसे जबरदस्ती भेज दिया।
झूठ कह रही हू क्या ? आपने ही उसे वहा के ऐशो आराम का लालच दिया
अच्छा अच्छा ! तू वह साडिया तह लगाकर रख !
आप जरा तह लगवाइए
आराम स करेग ! रुक जरा मैं उस बच्ची का फोन करता हू (फोन घुमाते ही पीछे का एक कोना हरे प्रकाश से प्रकाशित हाता है। मूछो वाला बुड्ढा फोन उठाता है।)
है लो है लो
है लो कौन ?
शर्मिला है क्या ?
क्या काम है ? आप कौन ?
मैं उसका (घबराकर फोन नीचे रख देते हैं, कोने मे अधेरा।)
क्या हुआ ?
वही बुड्ढा फिर स ! कहगा (शर्मिला के दादा की नकल करते हुए) 'आप उसके दादा कैसे ? मैं उसका दादा !"
(हसते है)

[अधेरा। प्रकाश। बाहर अधेरा। सडक पर का लैम्प जल रहा है। नाना नानी साडियाँ की तह लगा रह है। इतने म दूर म बैंड की आवाज सुनाई पडती है और पास पास आने लगती है। किसी की शादी की बारात आ रही है।]

नानी कसी आवाज आ रही है ?

नाना (जल्दी-जल्दी बालकनी मे जाते हैं और दूर तक देखते है) बारात बारात आ रही है (जल्दी से अदर जाते है)

नानी वारात ? (खुश होती है) किसकी ?

नाना तरी।

नानी (गदन झटककर) बडे रग म आए हो

नाना (हसते हैं, फिर जल्दी से) जल्दी चल देखेंग हम भी या शामिल ही हा जाए ?

नानी कहा ?

नाना वारात म।

नानी हटिए। वारात किसकी है, कौन जान।

नाना किसी की भी हा हम घुस जाएगे।

नानी एसे ही ?

नाना ऐसे ही क्यो ? यह जरी की ओढनी आढ नथ डाल देखू तो सही, दीनू की शादी म कैसी लगगी ?

नानी और फिर नीचे जाएगे ? आप जीना उतर कर

नाना कहती तो ऐसे है जसे तू खुद पैर घसीट कर जा सकती है। वालक्नी से ही देखेंगे। वारात के लाग हमारी तरफ देखेंगे

नानी (ओढनी ओढते हुए) आप मुझे नथ और गहने ता दीजिए !

नाना जल्दी कर ! मैं भी जरा तैयार होता हू बारात के लाग मुझे कही नौकर न समझ ले।

[अलमारी खोलकर सलवटे पडा हुआ रेशमी कोट निकालकर पहनते है। सिर परजरी की टापी रखत हैं। वालकनी पर आकर वारात कितनी पास आई, देखते हैं ' चल जल्दी कर बारात पास आ गई है।" वारात का वड जार स सुनाई देता है।]

नानी (नाक मे नथ डालकर नानी तयार। नाना उसे एकटक देखत

रहते हैं और विनोद से सीटी बजाते हैं) हटिए भी। थोडा इत्र लगा दीजिए।
(उसे एकटक देखते हुए) अब तेरा इत्र लाने बाजार जाता हू।
(नाना को देखते हुए) इश्‌। ऐसा भी क्या देख रहे हैं ?
मुझे लगा तू ही मडप म बठने वाली है
बस बहुत हो गई तारीफ।

[जल्दी-जल्दी दोना बालकनी म खडे हो जाते हैं। नीचे से जाने वाली बारात का प्रकाश गैस बत्तिया, बैंड की धुनें, घोडे पर बैठा हुआ दूल्हा, बारात निकल जाती है, बैंड की आवाज दूर होती जाती है। नाना नानी अदर आते हैं।]

(खुश होकर) सच कहती हू मुझे लगा मेरा दीनू ही घोडी पर बठा है
तेरा दीनू घोडी पर बैठेगा !
जरूर बैठेगा मैं भला छोडूगी कहा उसे बारात भी बिल्कुल ऐसी ही निकलनी चाहिए।
निकलेगी निकलेगी अब तू कपडे उतार !
इन दो मिनटा के लिए आपने मुझे यह कपडे डलवाए क्या
अब यह उतारो दूसरे पहनो
तो मत पहना, पहनने की जरूरत क्या है ?
बहुत हो गया मजाक सठिया गए हो !
(हसते हैं) सारी औरतें गदन ऊपर किए तेरी तरफ ही देख रही थी !
पर आप क्यो इतने ध्यान से उन सब औरतो को देख रहे थे ?
(चिढकर) तू भी एसी है ना। इतनी उम्र हो गई। पर तेरा शक्की स्वभाव वैसे का वसा रहा।

[इतने म एक तरुण दरवाजे के पास आकर दरवाजा

खटखटाता है नाम है श्याम देशपाडे ।]

नाना कौन ?

श्याम मुझे श्याम देशपाडे कहते है । आप कही बाहर जा रहे है ?

नाना नही नही, अदर आइए

श्याम बाहर से आ रहे है शायद । उस बारात से ?

नाना हा हा ! बैठिए बैठिए ।

श्याम किसकी शादी थी ?

नाना हमारे किसी रिश्तेदार की

श्याम अच्छा अच्छा । मैं आज न्यूयार्क से आया हू ।

नाना (हर्षित होकर) हमारा दीनू मिला था क्या ?

श्याम हा

नानी कैसा है ?

श्याम अच्छा है ! खूब अच्छा चल रहा है उसका ! नौकरी भी बहुत अच्छी है ।

नानी उसे छोडो । यहा कब आने को कह रहा था ?

श्याम पक्का नही कुछ । पर एक बार तो आएगा ही !

नाना यह तो वह आठ साल से ही कह रहा है । आप वहा कितने साल से रह रहे है ?

श्याम दो साल से । जस्ट टू इयर्स ।

नानी आप कैसे आ गए दो सालो मे ? ऐसे ही दीनू को आने मे क्या तकलीफ है ? क्यो नही आता वह ?

श्याम नौकरी का मामला है उसका !

नानी आग लगे ऐसी नौकरी को

नाना नौकरी क्या उसे यहा आने पर नही मिल सकती ?

श्याम ऐसा आप कहते है—पर यहा आने पर नौकरी नही मिलती, यह सच है ।

ता फिर आप कस दो साल बाद वापिस आ गए ?
मरी बात और है। मेर पिता जी का यहा कारखाना है—
इतनी ऊची शिक्षा पाकर भी यहा नौकरी नही मिलती, इस पर मुझे यकीन नही होता। हमारा देश गरीब है इसलिए पाच पाच हजार की नौकरिया
पाच पाच हजार नही हजार डेढ हजार की नौकरी भी मिल जाए तो भी वहा रहने वाले लडके यहा आ जाए
लेकिन बेकार रहने के लिए या जिस किसी तरह पट भरने के लिए यहा कैस आए ?
तो फिर उपाय क्या है ?
हम बूढे अपने बुढाप म किसका मुह देखें ?
यह भी सच है ! (सोचते हुए) पर वह भी क्या करे ? और आप भी क्या कर सकते है ? अभी ता दाना ही प्रश्ना का उत्तर नही है।
(जरा-सा चिढकर) है ! दाना प्रश्ना का एक ही उत्तर है मैं राष्ट्राध्यक्ष होता तो हुक्म जारी कर देता कि काई भी नौजवान बाहर न जाए और (अधिक चिढ़कर) पढकर ता वहा रहना बिलकुल ही
आप बेकार मत अपना खून तपाइए। (श्याम से) उसकी तबीयत कैसी है ?
बहुत अच्छी है
कोइ सदशा दिया उसने ?
सदशा नही, पैस दिए हैं ! (पसा का उल्लेख होते ही नाना गुस्से मे चक्कर काटने लगते हैं) दीनू न दो सौ डालर दिए थ मुझे आती बार बोला डढ हजार रुपय आपका दे दू !
(नोटा की गड्डी आगे करता है, कोई हाथ आगे नहीं करता।

श्याम रुपये मेज पर रख देता है और कहता है—) गिन लीजिए।

नानी ठीक है रहन दीजिए यहा आने के लिए उसन कुछ कहा ?

श्याम (घबराकर) नही कुछ कहा तो नही !

नानी पर अब उस यहा आ जाना चाहिए (नाना को) आप उसे फोन कीजिए (श्याम को) यहा एक अच्छी-सी लडकी है उसके लिए

श्याम (हडबडाकर) किसके लिए ?

नानी दीनू के लिए

श्याम दीनू न शादी कर ली है आपको पता नही ?

नाना-नानी (चिल्ला पडते ह) कब ?

श्याम पिछले रविवार ! रिसेप्शन अटेंड करके ही म वहा से चला था।

नानी लडकी कहा की है।

श्याम वही की ! अमेरिकन लडकी है !

[एकदम भयानक शाति हा जाती है। कोइ, कुछ नही बोलता। श्याम हडबडा जाता है। नाना खिडकी के पास आ जाते ह। दु ख स कही दूर देखत हुए—]

नाना मुझे लगता,ही था—

श्याम लडकी बहुत अच्छी ह—आप दु खी मत होइए आजकल ऐसी शादिया हाती ह बहुत होती ह !

[श्याम घबराकर इधर उधर देखता रहता है। उसे लगता है यह खबर उसने ठीक तरह नही दी या कुछ भूल हो गई है उससे। नानी अपना रोना रोक नही सकती। आखो से पल्लू लगाकर वह धीरे धीरे रोने लगती है। नाना खिडकी के पास खडे अधेरे म कही

देगत रहते ह । कोई भी कुछ नही वोलता । इतन म
अच्छा आय एम वरी सारी मारी जाता हू मैं ।'
ऐसा कहकर श्याम चला जाता है। नाना ठडे हुए हुए
कोट और टापी उतारत हैं। नानी अपनी आखें-नाक
पाछती हुइ नथ और गहन उतारनी है। नाना मज क
पास कुर्सी पर वैठत ह। सु त होकर वही कुछ दगत हुए
टेवल लैम्प का वट दवात रहत हैं। लैम्प जलता-
वुझता रहता है। यह सब चल रहा है। तभी अधेरा।

प्रकाश—कुछ दिन वीत गए हैं। समय सुवह का
है। नाना वालकनी की वेल को पानी दे रहे हैं। नानी
उदास दिल से खिडकी क पास एक स्टूल पर वठी है।
नाना पानी का लोटा अदर रखकर बाहर आत हैं।
कुर्सी पर वठत है। कुछ देर छत की तरफ देखत रहत
हैं। फिर सामन देखत हैं। निरुद्देश्य अखबार उठात
है और उदास जरो स देखत है। नानी थोडी देर नाना
की तरफ देखती रहती है। फिर गुस्सा होती है।]

आपको और कोई काम नही क्या ?
(एकदम अखबार रखते हुए) मुझसे कुछ कहा ?
और किमस कहूगी ? है ही कौन यहा ?
क्या कहा ?
सर मेरा !
पर हुआ क्या ?
लगातार पेपर क्या पढ़ रहे है ! रात का नानेश्वरी पढने को
कहा तब तो आपकी आखें दद करती है ! और अब पपर
पढत वक्त आखें नही दुखती ?

नाना (गुस्से से) लेकिन कौन पढ रहा है पपर ? यहा पडा था यू ही उठा लिया। वैठा-वठा करू भी क्या ?

नानी वोलना चाहिए आदमी को, कुछ न कुछ घर खाने को दौडता है

नाना बोलना चाहिए ? किस विषय पर ?

नानी किस विषय पर।

नाना सच पूछे तो मुझे अब बोलने मे भी आलस लगता है। मैं बालता हू तू सुनती है तू बोलती है मैं सुनता हू। दिन पे दिन महीनो पे महीनो, वर्षों पे वष। बोलने या सुनने के लिए और कोई भी तो नही !

[थोडी देर दोनो ही चुप बठे रहते हैं। छत की तरफ देखत है। ऊपर एक चिडिया इधर से उधर फुदक रही है। नाना फिर पेपर उठात है। और—]

नानी (एकदम चिढ़कर) पेपर रखिए नीचे !

नाना क्यो ?

नानी मैं कह रही हू इसलिए रखिए पहले पेपर नीचे

[नाना पेपर नीचे रख देते हैं और उसकी तरफ देखने लगत हैं। फिर पेट दबाते हुए कुछ बोलने के लिए बोलते हैं।]

नाना आज पट एकदम खराब है—

नानी पेट खराब होने को खाया क्या है ?

नाना कहती है खाया क्या है खाया क्या है ! अरे इतना भारी पराठा जो ठूसा है मेरे पेट म—

नानी अजवायन का पराठा था। कुछ वदहजमी नही होगी। रोज-रोज कप-भर दूध पिओ और सो जाओ, यह भी क्या हुआ ?

नाना (किंचित गुस्से से, किंचित बोर होकर) पर मुझे नही पचता ! पेट भारी हा जाता है मेरा !

कुछ भारी नही होता ! इधर से उधर चार चक्कर लगा लीजिए जब देखा तब बैठे रहते है वो पेपर लेकर। उठिए ना ! पहले उठिए !

किसलिए ? उठू किसलिए ?

जरा चक्कर लगाइए ! उठिए।

(उठते हैं। इस कोने से उस कोने तक चक्कर लगाते हैं और कहते हैं) पर तुझे कह देता हू, नानी ! आज रात कुछ बनाएगी तो प्राण चले जाए तो भी मैं कुछ नही खाऊगा और दूध भी नही पिऊगा। अच्छी तरह ध्यान मे रखना हा !

ऐसे कैसे चलेगा ? मैंने सूजी भून कर रखी है ! थोडा सा हलवा तो खाना पडेगा ? ऐसे नही चलेगा !

चलेगा नही यानी क्या ?

मैं सब समझती हू—जब से दीनू की शादी की खबर सुनी है, आप कुछ खाते पीते नही ! इतना क्या जी को लगाते है ?

तुझे किसने कहा ? दीनू ने अमरिकन लडकी से शादी कर ली, तो मुझे भला किसलिए बुरा लगेगा ?

आपको मुझे कुछ भी बताने की जरूरत नही। मै सब समझती हू ! जब देखा जाए तो महसूस तो मुझे होना चाहिए पर मुझ मे बडा धीरज है।

बडी आई धीरज वाली ! उठते-बैठते रोती रहती है—मैं क्या समझता नही ?

मैं रोती हू अपने कर्मों को ! दीनू ने शादी कर ली इसलिए नही !

[आंखों पर पल्लू रखकर रोती है]

पर अब क्या रो रही है तू ? हमने ते किया था ना ?

(उदास होकर) क्या ?

नाना दीनू की शादी के बारे म बार बार बात करके दु खी नही होगे।

नानी मैं कहा बात करती हू ? मैं तो कुछ नही कहती। कर ली उसन शादी ! हो गइ उसक मन की। हमारा क्या है ? हम आज हैं—कल नही।

नाना (रूखेपन से) आज हैं कल नही ! एसे कहत-कहत आठ दस साल बीत गए ! ऐम ही और आठ दस साल ।

नानी (ठडी सास भरते हुए) नही नही। अब यह जीना नही है ! कोई उम्मीद नही बची जब !

[थोडी दर शाति। नाना कुर्सी पर बठत हैं। फिर कुछ देर नानी की तरफ बडी शुष्क दष्टि स देखत रहत ह। नानी साडी क पल्लू स ही नाक आखे पोछती हुई अपना राना थामती है। नाना क्षण भर उसकी तरफ देखत रहत है और फिर—]

नाना उस विनय का कुछ पता ही नहीं ! अब बहुत किए वो आएगा भी नही।

नानी ऐसा किसलिए कह रह है आप ?

नाना (ऊपर चिडिया की तरफ देखते हुए) उस दिन जब वो यहा आया था ना तुझे वो सब नही कहना चाहिए था

नानी (करुण स्वर से) क्या, मैंने क्या कहा था उसे ?

नाना तूने उसे कहा ना ! कि रात बरात हममे से कोई आखें मीच ले तो चार लोगो को इकट्ठा करन के लिए कोई तो पास होना चाहिए

नानी (कुछ न समझते हुए) तो क्या हुआ ?

नाना उसी से घबरा गया होगा वो—

नानी पर झूठ क्या कहा मैंने ? मान लीजिए आज रात आधी रात को मुझे कुछ हो जाए तो आप कहा, किसे जाकर आवाज

लगाएग ? और आपका कुछ हो जाए (रोने लगती है) तो मैं क्हा जाऊगी ? (गला भर आता है। उससे बोला नहीं जाता। नाना को भी कुछ सूझता नहीं। वह सिर्फ नानी को तरफ देखते रहते हैं। क्षण दो क्षण। तभी फोन बजता है—)
(फान उठाते हैं) हलो हला

[दूसरी तरफ परदे के एक कोने मे पील प्रकाश म विनय भाल दिखाई देता है।]

हला नाना साहब है क्या ? मैं विनय भोले वाल रहा हू
अरे तू आएगा आएगा कह रहा था पर आएगा कब ?
(एकदम प्राण मे प्राण आते हैं) नदू बोल रहा है क्या ?
उसका क्या हुआ नाना साहब
(दिखावटी गुस्से से) तू मुझ नाना साहब मत कहा कर। सिर्फ नाना कह ! नाना की टाग वाला नाना ! (हसते हैं विनय भी हसता है।) हा हा तो क्या हुआ ?
यहा मरे मामा रहत है—वे अकेले हैं।
अकेले मतलब ?
वाल बच्चे नही और वस भी विधुर है।
अरेर !
(चिन्ता से) क्या ? क्या हो गया ?
(फोन पर हाथ रखकर) कुछ नही ! (हाथ उठाकर) हा !
तो मामा कह रहे हैं तू और कही जाकर क्या रहेगा ? यही रहना चाहिए तुझे ! माफ कीजिए
ठीक है। ठीक है।
आपके साथ रहकर मुझे सचमुच बहुत अच्छा लगता ।
ठाक है ! यह सब बातें सयाग की होती हैं—
मैं बीच बीच म आपर पास आता रहूगा फान पर भी बात करूगा चलेगा ना ?

नाना हा हा आपके मामा क घर फोन है क्या ?

विनय नही ! फोन नही है।

नाना अच्छा ! (समय काटने के लिए) और क्या खबर है ?

विनय और बात यह है कि मैंने बेलगाव पत्र लिखा था मेरे पिता जी का

नाना अच्छा अच्छा

विनय मरी वहन है ना शादी लायक और आपका वडा लडका

नाना (जल्दी से) छोटा लडका, वडा नही—

विनय (चकित होकर) क्या ? वडे का रिश्ता तै हो गया ?

नाना तै नही, शादी भी हो गई !

विनय इतनी जल्दी शादी भी हो गई ? और मुझे आपने बताया तक नही ?

नाना (हडबडाकर) तरा पता ही कहा था हमारे पास ? खबर कसे करत तुझे ?

विनय लडकी कहा की है ?

नाना लडकी ?

[जल्दी से फोन डिस्कनक्ट कर देते है। कोने म अधरा। नाना प्राणान्तक पीडा महसूस करते हुए खडे रहत है।]

नानी (घबराकर) क्या हुआ ?

नाना विनय पूछ रहा है, दीनू की शादी किससे हुई ? उसकी वहन है ना शादी लायक

नानी आप या चोरा की तरह क्यो महसूस करत हैं ? दीनू ने अपनी शादी खुद की है। हम चोरी काहे की ? हम सब को सच क्या न बताए ? छिपाए क्यो ?

[फोन पुन बजता है। नाना फोन उठाते हैं। दूसरी तरफ पीले प्रकाश म विनय।]

हू ला
फोन एकदम डिस्कनक्ट हो गया
हा हा !
तब फिर यू करें ?
क्या ?
जापके छाट लडक के लिए—
नद्दू के लिए ? उसकी उम्र अट्ठाईस के आस पास
ठीक है। देख लेंगे हमी न तो दखना है। आखिर—
सयोग की बात है बाबा सयोग की बात !
आपको लडकी की ज मपत्री वगैरह चाहिए ?
अभी नही ! जाठ दस दिन तक नद्दू खुद ही जाने वाला है
यहा।
अरे वा ! तब तो फिर से गुजिया बनेंगी।
(हसते हुए) हा हा ! गुजिया का क्या है ? गुजिया तो तरे
लिए भी बन सकती है
सुनत हे ? उसस पूछिए आ कब रहा है ? खास उसक
लिए बनाऊगी गुजिया ! यहा तो कोई मन स खाने वाला
चाहिए !
नानी कह रही है तू आएगा कब, यह बता जितनी चाहिए,
गुजिया बनाऊगी, खाने वाला चाहिए कोई !
आऊगा जरूर आऊगा मैं।
तो नद्दू क जाने पर लडकी देखने का प्रोग्राम बनाएग हम
तरी बहन यहा जा सकती है ? हम सफर करने म जरा मुश्किल
होती है।
आ जाएगी ! ले आएगे हम उस।
तब ता ठीक है।
अच्छा। नानी स मेरा नमस्कार कहिए।

नाना नही, मैं नानी से तरा नमस्कार नही कहूगा, तू खुद यहा आकर नानी का नमस्कार कर ।

विनय (हसते हुए) आऊगा आऊगा।

नाना (समय काटने के लिए) और क्या खबर है ?

विनय और तो कुछ खास नही। अच्छा ! फोन रखता हू !

[भट से फोन रखता है। दूसरी तरफ अधेरा। नाना कुछ देर 'हलो हलो' करत रहते ह। फिर फोन रखते है।]

नाना मुझे लगता है, अपने नदू के साथ यह लडकी जच जाएगी ! विनय की बहन !

नानी पहले कुछ मत कहिए। क्या पता किसकी गाठ किसके साथ जुडे ? इतना जरूर है, स्वभाव की अच्छी हा। नही तो नदू को पटाकर अलग घर बना लेगी।

नाना (एकदम चिढकर) तरी यही बुरी आदत है ! पहले से ही कुछ का कुछ बोलती रहेगी। शादी तो हो जाने दे पहल ? उसकी शादी हो गई तो अपनी जिम्मेदारी खत्म ! फिर हम दोना कही भी दूर जाकर शान्त चित्त से समाधि ले ले ! !

नानी समाधि ? हा हा ! लेगे ! आपको थोडी चाय दू ?

नाना बनाई है ?

[नानी पाव घसीटती हुई अदर जाती है। नाना फोन करने लगते है। दूसरी तरफ हर प्रकाश म शर्मिला के दादा जोर से 'हलो हलो, कौन है ??' चिल्लाते है। नाना कुछ बोलते नही। सिफ जीभ बाहर निकालते है और फोन नीचे रख देते है। इतने म नानी आती है।]

नानी अब एक बात आपसे भी कह देती हू।

नाना क्या ?

नानी नदू एक बार यहा आ जाए तो उसे छोडिए नही। उससे कहिए,

मिलिटरी की विरियानी, पुलाव नही चाहिए हम ! घर की रूखी सूखी ठीक है। नौकरी नही की, तो भी चलेगा आपकी पेंशन खाकर भी सरेगा। वह सिफ यहा रहे, घर पर, हमारी नजरो क सामने।
मैं बक की पास-बुक उसके हवाले करक कहूगा जो चाहे धधा कर इनसे मेडीकल स्टार खोल चाहे रेडियो की दुकान खोल जो जी चाहे कर।
पर यह सब आप मुझसे कहन की बजाय उसस कहिए। वो जब आएगा तो चुप बठे रहेंगे। मन ता त कर लिया है, अब की बार उसने वापिस जाने के लिए कहा तो म उसके पावा म सर पटक कर प्राण दे दूगी, फिर वो और आप जो जी म आए कीजिए !
हा हा ! पर तू तो चाय लाने को कह रही थी ?
हो रही है गरम ! (अदर जाती है)

[नाना पुन फोन करत है। दूसरी तरफ पुन शर्मिला के दादा ! दादा 'हलो हलो' जोर स चिल्लात हैं। नाना इस बार भी कुछ नही बालत। बीच म एक बार फोन पर हाथ रखकर दबी हुइ आवाज मे चिल्ला चिल्ला !' कहते हैं। शर्मिला के दादा ऊचे ऊचे हला हलो कौन है' वगैरह चिल्लात रहत है। नाना आख मारकर हसत है। दादा फोन रख दत हैं। उस तरफ अधेरा ! नाना भी फोन रखत हैं।]

(चाय लाती है) किसका फान था ?
शर्मिला का करके देखा था। पर फोन बजा नही कि उसका दादा हाजिर ! (फोन उठाकर नकल करते हैं) हला—हला कौन, कौन बोल रहा है ? (धीमी आवाज करके) तरा दादा ! नीचे रख फान ! (फोन नीचे रखते हैं) लगता है मिलिटरी म

था। फोन पर भी हुकूमत जताने लगता है

नानी अपनी पोती को सभाल कर रखता होगा।

नाना इसमे सभालने की क्या बात है ? म उस भगाने जा रहा हू ?

नानी क्या पता किसी का ? (हसती है)

नाना तू जरा नम्बर मिला क देख—

नानी देखू नम्बर (नम्बर देखकर फोन घुमाती है। दूसरी तरफ प्रकाश मे शर्मिला) हलो कौन शर्मिला ?

शर्मिला हा। आप कौन ?

नानी बेटे ! मैं तेरी दादी—

शर्मिला कौन-सी दादी ?

नानी वो तेरे दादा, जो तुझे फोन करते है ना ?

शर्मिला अरे हा वो राग नम्बर वाले दादा ?

नानी हा हा ! उ ही की पत्नी हू मैं यानी तेरी कौन ?

शर्मिला राग नम्बर वाली दादी—

नानी शैतान लडकी ! क्या कर रही है ? स्कूल नही जाएगी ?

शर्मिला स्कूल जाने की ही तैयारी कर रही हू अब जाऊगी दादा क्या कर रहे हैं ?

नानी दादा इस वक्त जरा स चिढे हुए हैं (नाना गुस्से से हाथ झटकते हैं)

शर्मिला क्यों ?

नानी पुरानी आदत है। बोल जरा उनके साथ भी।

नाना (फोन लेते हैं) अरे ! शर्मिला ?

शर्मिला आप गुस्सा है क्या ?

नाना वो बाद मे बताता हू। पहले मुझे दादा कहकर पुकार !

शर्मिला दा दा !

नाना (सुख महसूस करते हैं) ऐसे ! कितना अच्छा लगता है !

शर्मिला गुस्सा गया ना अब ?

हा ! बिलकुल !

। नटू भैया आ गए क्या ?

अभी नही ! लकिन आएगा !

। कब ?

इसी हफ्त आना चाहिए।

। वो आए ता मुझे बताइए मुझे उनसे मिलना है

क्यो कोई काम है उनस ?

। हा, दो काम हैं

कौन स ?

। मुझे उन्हे पायलट की ड्रस म देखना है

अच्छा अच्छा ! और दूसरा ?

। इस बार परीक्षा म 'पायलट की आत्मकथा' पर प्रस्ताव आएगा मैं उ ही से पूछूगी।

अर ! इमम उनसे पूछने की क्या बात है ? हम उ ही से लिखन को कहूगे ! ठीक है ना ? हला

[तभी ऊपर से शर्मिला क दादा आते हैं और उसस पूछत है 'किसस बोल रही है ?' किसी स नही कहकर शर्मिला फोन नीचे रख देती है। दूसरी तरफ अधेरा। नाना कुछ घबरा कर फोन नीचे रख देत है।]

क्या हुआ ?

होगा क्या ? उसका वो बूढा दादा फिर स आकर चिल्लाने लगा (चिढकर) मैं और वो जब बात कर रहे होत है, यह बुडढा पता नही क्या बीच म टपक पडता है ?

वो सब तुम्हारा तुम जानो मैंन ता फोन मिला दिया था—

(चिढकर) बडा उपकार कर दिया ! फोन पर कौन बात कर रहा है स्कूल जान वाली बच्ची या कोई बडी औरत, यह देखना था तुझ ! मैं अच्छी तरह जानता हू तुझे ! अब मुझे कुछ मत

बता तू ! (नानी हसती है।)

नाना रहने दो।

[हसी रोककर नानी एकदम गम्भीर हो जाती है। नाना उसकी तरफ टकटकी लगाकर देखत रहत हैं। नानी भी थोडी देर टकटकी लगाए देखती है। फिर कोने म रखी झाड़ू उठाती है।]

नाना (ठडेपन से) क्या करन लगी है ?

नानी जरा झाड़ू लगा देती हू।

नाना क्यो ? म्हादू नही आएगा ?

नानी देखत तो हैं वो कैसी झाड़ू लगाता है। सारी धूल ज्या की त्यो

नाना कहा है धूल ? यहा इतनी धूल आएगी कहा से ?

नानी (जमीन पर पैर रगड कर दिखाती हुई) यह क्या है ?

नाना (आगे होकर नानी के हाथ की झाड़ू खींच लेते हैं) रसोई म जितना मरमर कर मरती है वही बहुत है ! कल अगर कमर पकडी गई तो सब कुछ मुझे करना पडेगा मैं लगाता हू झाड़ू ! देख, कैसे साफ करता हू कमरा !

नानी (झूठमूठ चिढ़कर) लाइए वह झाड़ू इधर ! कहते है साफ करता हू कमरा। कर लिया साफ ! मैं मायके जाती थी तब कैसा कबाडखाना बनाकर रखते थे, कमरे का, पता है मुझे !

नाना उस वक्त और काम होत थ मुझे। अब क्या काम है ? वक्त काटे नही कटता !

[नाना झुक कर झाड़ू लगाने लगते हैं तभी दरवाजा खटकता है।]

नानी देखिए कौन आया है

[नाना दरवाजा खोलते हैं। दरवाजे म म्हादू खडा है।

वह एकदम नाना के हाथ स भाड़ खीच लेता है और हमेशा की तरह जल्दी जल्दी भाड़ लगान लगता है। नाना शरमा कर देखते रह जात ह। और नानी पल्लू म मुह छिपा कर हसी दवाने का प्रयत्न करती है।]

साला पठान है एकदम

क्या हुआ ?

झाड़ कितनी जोर से खीची मर ने! एक थप्पड जड देता हरामजादे के! पर यह भी चला जाता। हमारे पास इतने साल टिकने वाला यही एक !

बचपन से ही यही आदत

किसकी ? मेरी ?

नही, म्हादू की वह रही हू। इतना सा बच्चा था जब आया था तब से हर काम म एसी ही जल्दी मचाता है जी का आराम तो है ही नही इसक !

यह मेरे हाथ की भाड़ खीच लेगा, मुझे पहले पता होता तो ऐसी कस के पकडता भाड़ कि साल का वाप आ जाता तो भी मेरे हाथ स नही छुडा पाता! (नानी हसने लगती है और हसते हसते खिडकी के पास जाकर पल्लू मुह पर रखकर बठ जाती है।) अब तुझे हसी क्यो आ रही है ? जरूर मुझ म कुछ नजर आया होगा। (नानी गदन से 'नहीं' कहती है पर हसती रहती है।) क्यो ? क्या हुआ, इतना हस क्यो रही है ?

काशी स्टेशन पर की बात याद आ गई

कौन सी बात ?

आपक हाथ स थैली खीचकर दिन दहाडे चोर जब भागा था, वही तब भी आपन ऐसा ही कहा था वो थैली खीच लेगा यह जानते तो थैली का भी एसी कस के पकडे रहत।

नाना हस हस ! तुझे तो मजाक सूझना है वैसे थैली म था क्या ?

नानी दस दस के छ नाट थे उसम।

नाना **(एकदम चिढकर)** तो क्या हुआ ! वो तू मायके से तो नही लाई थी ?

नानी **(गुस्सा हो जाती है)** मेरे मायके को बीच म लाने की कोई जरूरत नही !

नाना क्यो नही। जरूर लाएगे !

नानी लाओ तो दखू। सभी जापे

नाना सभी यानी क्या ? तेरे ही ना ?

नानी हा मेरे ? पहले जापे की बात और होती है। आपने तो मेरे सारे जापे वही स करवाए ! एक पैसा भी कभी मेरे बाबा को दिया ? दहेज म नकद तो खूब गिनकर ले लिया था। **(नाना आराम से कुर्सी पर बैठकर जरा सास लेते हैं)** अब चुप बैठे हैं !

नाना तू जबान चला रही थी मैं चुप न बैठता तो और क्या करता उस पर भी बात जब हो रही हो मायके की। **(नानी को कुछ याद आके हसी आ जाती है। नाना उसे देखकर और भी चिढ जाते हैं।)** अब फिर क्या हसने लगी ?

नानी याद है ? मेरे पहले जापे के वक्त आप बहुत रोए थे ?

नाना झूठ ! मैं क्यो रोता ?

नानी सच बताइए रोए नही थे आप सोचकर, मैं जापे के बाद वापिस आऊगी भी कि नही

नाना बिल्कुल नही ! तू जापे से लौटकर आएगी या नही, इससे हुआ क्या ? अगले साल फिर तूने दूसरे जापे की तैयारी कर ली

नानी **(ऊपर ऊपर से गुस्सा होकर)** बस बस ! पहले बताइए, आप

राए थ या नहीं ? बाबा भी—(हसती है)

हा हा रोया था ! बहुत रोया था ! पर उसके लिए अब इतना हसने की क्या जरूरत है ?

और याद आया

अब और क्या याद आया ?

इस म्हादू की औरत का भी बच्चा होने वाला है इन्ही दिनो जरा आवाज लगाइए उसे

तेरे ध्यान मे सब रहता है—

[नाना म्हादू को आवाज लगाते हैं। थोडी देर बाद म्हादू आता है। उसके हाथ मे एक गीला कपडा है। मुह मे पान भरा है इसलिए मुह एकदम बद है ? हाथो के सकेत से 'क्या है' पूछता है।]

गाव से कोई पत्र आया ? तेरी औरत का हुआ कुछ ? (म्हादू गर्दन हिलाकर 'ना' कहता है।) कब होगा ? (हाथ की दो उगलियो के सकेत से वह बताता है कि अभी 'कुछ देर' है। नानी समझती है दो दिन तक होगा।) दो दिनो तक ? (म्हादू गर्दन से 'ना' कहता है और पुन दो उगलिया हिलाता है) दो महीनो तक ? (म्हादू 'नहीं' कहता है पुन दो उगलिया हिलाता है। यह सब देखकर नाना एकदम चिढ़ जाते हैं।)

जा जा ! (वह अन्दर जाता है) दो साल बाद बच्चा होगा शायद !

बच्चे के कुछ कपडे देने चाहिए उसे।

है तेरे पास ?

बहुत रखे है ! दीनू के बच्चे होगे, यह सोचकर बहुत सी कर रखे थे पर अब उसके बच्चे यहा के सिले कपडे थोडे पहनेगे ? पडे रहे नदू के बच्चे पहनेंगे चार इस म्हादू के

बच्चे को दे दूगी ।

नाना (उदास होकर) सभी कपडे म्हादू के बच्चा को द दे ।

नानी सभी क्यो ? मेरी दूसरी बहू भी तो आएगी कपडे नदू के बच्चो के काम आएगे और अगर नदू के बच्च नदू पर गए तव तो घट घट बाद मूतेग कितनी फ्राक लगाटी लगेंगी

नाना (चिढकर) वो तो ठीक है पर उस दीनू क सर पर फेंकेगी तो

नानी मैं कौन हाती हू किसी को देन वाली ?

नाना परसो रात जव दीनू का फोन आया तव क्या कह रही थी उसे ?

नानी कुछ भी नही कहा मैंन । मेरा बच्चा अमेरिका स फोन करे तो मैं बोलू भी न उससे ? हद है आपकी भी !

नाना बोल। जितना जी मे आए बोल। पर पूछ क्या रही थी उससे ?

नानी पूछा था आ कब रहा है इसम गलत क्या किया मैंन ?

[नानी की आवाज एकदम कातर हो जाती है।]

नाना कुछ भी नही ! पर भेजने को क्या कह रही थी ?

नानी उसम भी क्या गलत है ? बहू के लिए मगलसूत्र भेज दू ? पूछ लिया ता क्या हुआ ?

नाना पर बहू क्या फोन पर बोली तुझसे ?

नानी मुझे अग्रेजी कहा आती है ?

नाना पर मुझे तो आती है ?

नानी रहने दीजिए ! अपन बच्चो से इतना मानापमान कसा ?

नाना पर ये तो बता मगलसूत्र भेजने को जब कहा तून तो क्या बाला दीनू ? नही भेजना वो डालेगी नही यही ना ?

नानी रहने दीजिए ! इसके लिए आप क्या इतना खफा हैं ?

नाना मैं कहा खफा हू, मैं खफा होऊ भी किसलिए ? (विक्षिप्त हुए

से कातर स्वर मे हाथ इधर से उधर करते हुए) मैं किसलिए त्रफा होऊ ? मरा क्या है ? बच्चा को ज म दिया शिक्षा दी पख दिए वो उमगे ही उटन दो ! हम वो अपने पखा का सुख दें यह सोचना भूल है ! उडने वाले को उडने दो !

[विक्षिप्त होकर चक्कर नगात रहते हैं। फिर फोन उठाकर कोई नम्बर घुमान लगत है। तभी पट स हाथ पोछता हुआ म्हादू आता है और बाहर जान लगता है। उस दक्त ही नानी का एकदम याद आता है।]

गोलिया खतम हो गइ ना ? लान को कहिए म्हादू से—(आवाज लगाती है) म्हादू

नीद की गोलिया खतम हो गइ ना। (म्हादू आता है) हा हा ! अच्छा याद आया—(नाना अलमारी से कागज निकालत हैं उसे लाते हैं और म्हादू के हाथ मे देते हैं।) दवाओ की उसी दुकान स। एक शीशी ले लेना, यह कागज दिखाकर।

[म्हादू मुह नही खोल सकता इशार से ही कुछ पूछता है। नाना भी उसी की नकल करत हुए मुह खोलत और तवाकू खाने की नकल करत हुए उस कुछ बतात है। म्हादू जाता है। तभी दरवाजा खटकता है।]

कौन आया है दखिए।

कौन ? (दरवाजा खोलते हैं। पोस्टमैन खडा है। नाना उससे पत्र लेते हैं।)

किसका पत्र है ?

(पत्र खोलते हुए) नदू का दिखता है ! (नानी अपने नाक पर-का चश्मा नाना को देती है। लगा कर नाना पत्र पढते हैं।)

(अधीर होकर) चल पडा होगा

ज ज (पढते ही नीचे बठ जाते हैं और नानी की तरफ

देखने लगते हैं।)

नानी क्या लिखा है ?

नाना वो अभी नही आ रहा !

नानी (घबरा कर) क्या ?

नाना सबकी छुट्टी रद् कर दी गई—

नानी (आक्रान्त होकर) पर क्या ?

नाना युद्ध शुरू हो गया पाकिस्तान स।

नाना (एकदम चिढकर) युद्ध क्यो करते है ये युद्ध के बिना क्या रुका रहता है ? कितनी चि ता लगा दी हमारे जी को ! अब कब आएगा वो ?

नाना क्या पता !

[नानी खिडकी से बाहर देखती रहती है। तभी सडक पर का लैम्प जलता है। नमस्कार करती है। और अन्दर जाने के लिए उठती है।]

नाना कहा चली है तू ?

नानी भगवान के आगे दिया जलाती हू। अब सब

नाना तू चिन्ता मत कर ! हमारे चिन्ता करन से होगा ही क्या ?

नानी मैं कब चिन्ता करती हू ? कुछ बुरा नही होगा हमारा। हमने कभी किसी का बुरा नही किया। (अन्दर जाती है।)

[नाना उठकर मेज के पास आते हैं। टबल लैंप जलाते है। बुझाते है। बार बार वही। फिर धीरे-से रेडियो लगा दत है और कान लगाकर सुनत हैं—'जीतेंगे या मरेंगे' सुनते ही रेडियो बन्द कर देत हैं। सिर खुजलात हुए इधर स उधर घूमते है। तभी अधरा।]

दूसरा अंक

[पर्दा ऊपर जाता है। वही स्थल। दो चार दिन के बाद। कमरे में नाना हैं। उदास मन से खिड़की के बाहर देख रहे हैं। तभी फोन बजता है। फोन उठाते हैं। दूसरी तरफ प्रकाश में शर्मिला खड़ी है।]

नाना — हलो कौन?

शर्मिला — मैं शर्मिला

नाना — (निरुत्साहित होकर ठंडे स्वर में) कैसी है? ठीक है ना?

शर्मिला — दादा जी अब तो नंदू भैय्या के मजे हैं ना?

नाना — क्यों?

शर्मिला — अब तो युद्ध शुरू हो गया है वो जोर से विमान उड़ाएंगे धड़ाधड़ बम गिराएंगे

नाना — हां हां।

शर्मिला — फिर शत्रु की एकदम दाणादाण

नाना — हां!

शर्मिला — अब तो नंदू भाई को सोने के पदक मिलेंगे। हैं ना? वर्दी पर लगाएंगे जब तो रोब ही रोब, शान ही शान!

नाना — हां

[नाना फोन नीचे रख देते हैं। उस तरफ शर्मिला 'हलो हलो दादा जी' कहती पुन: फोन करती है। फोन एंगेज्ड। फोन रख देती है। उस तरफ अंधेरा। नानी आती है।]

नानी — किससे फोन पर बात कर रहे थे?

नाना उस लडकी
नानी क्या कह रही थी ?
नाना कुछ नही।
नानी कुछ नही क्या ? कुछ बताइए ना।
नाना क्या बताऊ ?
नानी कुछ भी !
नाना पर क्या बताऊ ?
नानी कुछ भी ! ताकि लगे तो सही, यहा कोई है ! कुछ तो बोलिए !
नाना क्या बोलू ?
नानी कुछ भी ! कमरे म आवाज तो हानी चाहिए नही तो डर लगता है। दिल घबराता है बोलिए, कुछ भी बालिए !
नाना वह कह रही थी
नानी वह कौन ?
नाना अरे वही बच्ची शर्मिला !
नानी अच्छा अच्छा ! क्या कह रही थी ?
नाना कह रही थी, अब नद्दू भैय्या जोर से विमान उडाएगा !
नानी (घबराकर नीचे बठती हुई) और कुछ बताइए, और कुछ
नाना और क्या बताऊ ?
नानी कोई एसी बात कीजिए जिससे मन बहले।
नाना ऐसी ? (विचार करत हुए) जिसस मन बहले ? (विचार करते हुए।)
नानी (किसी पुरानी याद मे मन रम जाए, इसीलिए) याद है ? काशी के स्टेशन पर—
नाना हा हा ! क्या हुआ था ?
नानी क्या हुआ था क्या ? एसे कह रह हैं जैसे आपको कुछ याद ही नहीं।

सच, नही !
चोर न आप क हाथ स थली नही छीन ली थी ?
[नानी हसन का प्रयत्न करती है। पर नाना नही हसत। यह दखकर नानी चुप हो जाती है। नाना सुध म आकर।]
हा हा !
उस वक्त आपन क्या कहा था ?
क्या कहा था ?
जस आपको कुछ याद ही नही
सच याद नही आ रहा तू बता ना ? मैंन क्या कहा था ?
(याद करती है) क्या कहा था (उसे भी कुछ याद नहीं आता) जान दीजिए हम ऐसा करत है
क्या ?
जरा बाहर घूम कर आए ?
मैं कहा इस वक्त पर घसीटती हुई जाऊगी ?
अच्छा ! तो यू करत हैं
क्या ?
मैं फोन करता हू
शर्मिला को ?
नही, उस नही।
और किसे ?
(टेलीफोन डायरेक्टरी नानी को देते हुए) यू कर तू कोई भी एक नम्बर निकाल।
जान न पहचान, यू ही ?
जान-पहचान की क्या जरूरत है ? शर्मिला स कहा जान-पहचान थी ? उसका भी तो राग नम्बर मिला था ? अब मैं उसका दादा हू तू दादी ! पिछले ज मो क सम्ब ध होत हैं "

पिछले ज-मा के ! (ध्यान मे कोई बात आती है) नानी -
नानी !

नानी क्या ?

नाना मुझे तो लगता है अपनी मालू मालू चल बसी ना ?
वह वह कही यह शर्मिला तो नही ? फिर से ज म लेकर
हम ढूढ रही है शायद !

[सुनकर नानी एकदम हडबडा जाती है। उसके मन म
तूफान उठता है। वह नाना की तरफ देखती रहती है
और नाना उसकी तरफ। तभी नानी एकदम सुध मे
आते हुए—]

नानी आपका बताऊ कोई नम्बर ? (डायरेक्टरी देखती है।)

नाना (विक्षिप्त की तरह देखते हुए) किसका ?

नानी टेलीफोन नम्बर

नाना नम्बर ? मालू का

नानी (जरा घबराकर) यह ऐसे क्या कर रहे हैं ? किसी को फोन
करने की सोच रहे थे ना आप ?

नाना किसे ? हा हा, बता नम्बर। (रिसीवर नीचे रखा हुआ
देखकर) अरे बाप रे ! रिसीवर यही पडा है ? (रिसीवर
ऊपर रखते है।) किसका नम्बर कह रही थी तू ? (नानी
डायरेक्टरी खोलती है) चश्मे के बिना तुझे क्या दिखाई देगा !
ला इधर। (इतने मे फोन बजता है। नाना फोन उठाते हैं।
उस तरफ फोन पर विनय बोले।) हलो !

विनय हलो, नाना बोल रहे है ?

नाना (खुश होकर) हा हा !

विनय मैं, विनय।

नाना अरे पर तू है कहा ?

नानी (अधीरता से) नदु है अपना ?

(रिसीवर पर हाय रखकर नानी से) नही, विनय है।
किसे बता रह हैं ?
नानी पूछ रही ह, किसका फोन है ?
नानी की तबीयत कैसी है ?
चलता है अब हमारी तबीयत का क्या है ? लेकिन तेरा क्या पता ठिकाना है ?
मैं आऊगा आपकी तरफ, दो एक दिन म।
आ चुका ! आऊगा आऊगा कह के उगली से शहद ही चटाता रहता है।
आ चुका ! उससे पूछिए—तुझे इघर आए कितने दिन हो गए ?
सुन लिया ? नानी कह रही है, तुझे इधर आए कितने दिन हो गए ?
सॉरी ! कल नही ता परसो जरूर आऊगा अव।
आना आना ! (वक्त काटने के लिए) और क्या खवर है ?
फोन तो इसलिए किया था
किसलिए ?
आपका नदू कव आ रहा है ?
नदू अब (आवाज नरम हो जाती है) युद्ध खत्म हुए बिना कसे आ सकगा ? अचानक युद्ध
मुझे वही शक था।
(घबराकर) कैसा शक ?
यही कि नदू अब युद्ध खत्म हुए बिना यहा नही आ सकगा
बात य है कि वा बलगाव स आज यहा आ गई है।
कौन ? मालू आई है ?
(हड़बड़ाकर) मालू मालू कौन ?

नाना मालू ? (एकदम जागते हैं) तू किसके लिए कह रहा था ?

विनय अपनी बहन

नाना अरे हा तेरी बहन आ गई है क्या ? अच्छा अच्छा ! तो उसे कल यहा लेकर आना ! हम देख लेते है तब तक ! नद्दू बाद मे देख लेगा पसद तो आएगी ही

नानी कल ही लेकर आने को कहिए।

नाना सुना ? नानी कह रही है कल जरूर लेकर आना उसे। बहू का मुह देखने की बहुत जल्दी है नानी को।

विनय (हसता है) सयोग की बात है ! पर सवाल यह है कि वो यहा रुके कितने दिन ?

नाना क्यो ? कही दूसरी जगह दिखाने का भी प्रोग्राम है ?

विनय और दो जगह

नाना ठीक है बहन तेरी है हमारा तो कोई हक नही उस पर

नानी हक कैसे नही ? बहू नहीं बनेगी ?

नाना सुना ? नानी कह रही है हक कैसे नही ? बहू बनेगी हमारी (नानी की तरफ देखकर) अपने बच्चो पर ही जब अपना हक नही

विनय क्या कह रहे है ?

नाना अरे ! मैं कह रहा था, आप लोग अपना देख लीजिए मुझे मेरा मन क्या कह रहा है पता है ? मेरा तो यही अनुभव है जब कोई बात बार बार मेरे मन को कचोटती है वह जरूर पूरी होकर रहती है हमेशा से अनुभव है मेरा ! (विनय बीच मे कुछ बोलता रहता है।) हमेशा से यही अनुभव है आजकल बार बार मुझे यही लग रहा है। तू यहा पहली बार आया था ना ? उसी दिन से मुझे बार-बार यह लग रहा है कि तेरी बहन हमारी बहू बनेगी

नदू आएगा जल्दी आएगा
कहिए फिर स मिलिटरी म भी नही जाएगा
हा हा ! और वह अब मिलिटरी म नही जाएगा यही रहेगा। हमने तय किया है, वह शादी करक यही रह हम भी तो अब यहा कोई न कोई चाहिए रे !
बहू की गोद भराई, जापे
नानी का भी जल्दी है वहू की गोद भराई की जापो की छाटे बच्चे के कपडो का गटठा तयार है इन कपडो के लिए तो कम से कम बहू का जापा होना चाहिए जल्दी।
(हसते हैं) सच कहता हू (गम्भीर होते हुए) हम बहुत बोर हो चुके है आसपास अपने हा बच्चा का शार हो ऐसा बार बार जी चाहता है—
(खुद से बोलती हुई) दूसरे क हाथ का बना खाना खान की इच्छा हाती है
नानी तो दूसरे किसी के हाथ का बना खाना खाने को तरस गई है। तरी बहन को खाना बनाना आता है या नही ?
बहुत अच्छा ! फस्ट क्लास खाना बनाती है।
मटन वगैरह ? हम नही खात पर हमारा नदू शौक स खाता है।
उसे सब आता है।
मतलब सब कुछ पक्का हो गया
(बातचीत बन्द करने के इरादे से) तो दखत है सयोग कहा हैं उसक और जगह भी
जल्दी मत करना। पहले कल तू उस यहा ले आ
देखता हू मामा से भी पूछना हू
(वक्त निकालने के लिए) और क्या खबर है ?
[तभी विनय फान नीचे रख दता है। दूसरी तरफ

अधेरा। नाना हैलो हैलो' कहत हुए फोन नीचे रख दते हैं।]

नानी आपन जो कहा वो सच है

नाना क्या ?

नानी मुझे भी आपकी तरह ही लगने लगा है।

नाना क्या ?

नानी कि विनय की बहन इसी घर म आएगी

नाना आएगी इसम तो जरा भी शक नही ! मुझे तो और भी एक लगता है नानी—

नानी क्या ?

नाना वह शर्मिला वह हमारी मालू ही है

[नानी एकदम चुप हा जाती है। नाना अलमारी के पास जात हैं और वहा कुछ ढूढ़न लगत ह।]

नानी अब क्या ढूढ रह हैं ?

नाना पुराने फोटो।

नानी वो किसलिए ? पूरी अलमारी ऊपर नीचे कर देग।

नाना यह देख मिल गए फाटो ! (एक फोटो दिखाते हुए) मैं तू दीनू नदू और तेरी गोद म मालू मालू ! देख तो सही उसका चेहरा ! ढाई साल की थी ना ? (नानी शून्य नजरो से देखती रहती है) चेहरे दख एक एक के (फोटो को चूमते हैं) पगले कही के

[नानी पैर घसीटती हुई रसोई म जान लगती है।]

नाना जा कहा रही है ?

नानी दूध गम करती हू (अन्दर जाती है)

[नाना उसे जाती हुई देखते हैं और फिर धीरे से चोरी से रेडियो लगात हैं। कान लगाकर सुनत हैं। खबरें— पूव बगाल म हमारे वैमानिको न आज शत्रु के ठिकानो

पर जोरदार हमले किए। अनेक ठिकानो पर भयानक आग लगाई। काफी दर तक धुआ ही धुआ दिखाई देता रहा। शत्रु के आठ विमान गिराए गए। हमारे दो ही विमान 'नाना जल्दी से रेडियो बन्द कर देत है। तभी नानी आती है। नाना उससे नजर चुराकर इधर उधर देखन लगते है।]

कुछ सुना रेडियो पर ?

(एकदम घबराकर) कुछ नही ! कोई गाना चल रहा था बसुरे स्वर मे

(नाना की तरफ देखती हुई) झूठ मत बोलिए ! (रेडियो लगाती है।)

मैंने कहा झूठ बोला ? (अस्वस्थ होते हैं।)

[रेडियो पर खबरें जारी काश्मीर सीमा पर शत्रु के आठ विमाना का खातमा करके हमारे सभी विमान ज्यो के त्यो वापिस आ गए है। हमारी कोई विशेप हानि नही हुइ। खबरें खत्म।' नाना लम्बी सास छाडत है। नानी की तरफ देखत है और हसने का प्रयत्न करत हैं, पर नानी गभीर ! पर घसीटती हुई अन्दर जाती है। नाना मज के पास बठन हैं। टेबल लप जलात हैं। टवल पर रक्खी नानश्वरी सामने रखकर एक दोहा गुनगुनात हैं।]

हात है जहा सब निद्रित।
होता है वह वहा जाग्रत।
जहा हात हैं सब जाग्रत।
वह साता है।

[तभी नानी एक कप दूध लेकर आती है और कप नाना के सामन रखती है।]

नाना दूध पीने को अब मन नही होता मेरा, दूध से बहुत ऊब गया हू ।

नानी ऊबने से कसे चलेगा ? पेट म दूध नही गया ! तो कल वैसे कहोग— थक गया हू थक गया हू ।'

नाना (ऊबकर) नही रे ! नही कहूगा ।

नानी अच्छा ना सही ! पर अब ल लीजिए दूध !

नाना नही, सचमुच ऊब गया हू दूध से ।

नानी तो फिर पराठा बना दू ?

नाना नही ।

नानी दूध मे स्लाइस डाल दू ?

नाना नही बाबा ! कुछ नही ! कुछ भी खान का मन नही इस वक्त ।

नानी इसीलिए तो दूध दे रही हू । मैंने नही लिया क्या ?

नाना झूठ मत बोल । नीद की गोली के साथ लेगी तू ।

नानी आज पानी के साथ लूगी गोली ।

नाना दूध दे रही है ता नीद की गोली भी द दे । इसम से आधा दूध ले ले ।

नानी आप लीजिए ! मैं अन्दर से लती हू ।

[अ दर जाती है। नाना मेज की दराज से शीशी निकालत हैं और दो गोलिया हाथ पर लेते हैं। इतने म नानी दूध लेकर आती है। नाना दूध और गोलिया लेत है। नानी गोलियो के लिए हाथ आगे करती है और कहती है—]

नानी दीजिए ।

नाना रोज रोज इसी तरह नीद की गोलिया नही मिलेंगी ! आदत पड जाती है ! (गोलिया देते हैं।)

नानी दीजिए ! एक बार य खूब सारी दे दीजिए। लूगी और सुख

की नीद सो जाऊगी ! फिर नही उठूगी !
पागल है। कहती है सो जाऊगी सुख से ! कैसे सो जाएगी ?
कल को नदू ने आकर जब आवाज लगाई नानी नानी
नानी !

[नानी दूध पीते पीते इन्ही शब्दो की प्रतिध्वनि सुनती है। नानी नानी नानी !'—ऐसा सिफ नानी का सुनाई पडता है। सुनत सुनत एकदम हडबडा जाती है।]

क्या हुआ ?
कुछ नही।
तो ऐस एकदम हडबडाई क्यो ?
आपको कुछ सुनाई दिया ?
क्या ?
नानी नानी ऐसी आवाजे ?
छे ! आभास हुआ होगा यू ही। मैंने कहा था ना शायद इसी लिए—दे दो।

[नाना कप लेकर अ दर जाते हैं। नानी चारपाई पर बैठती है। धीर स पर उठाकर ऊपर कर लेती है। चादर ओढ कर लट जाती है। नाना कप रखकर बाहर आत हैं।]

दीनू का फान नही आया आजकल
सो जा अब ! ससारिक चिन्ता छाड।
आप सोने लग है ?
सोता हू थोडी दर म।
जरा ज्ञानश्वरी पढिए सुनत-सुनत नीद आ जाएगी

[नाना मेज क पास बठत है। और ऊचे स्वर से ज्ञानश्वरी क दोहे पढन लगत हैं।]

जिसका चित्त है सदोदित।
पाता प्रसन्नता अखडित।
वहा प्रवेश नही समस्त।
भव दु खा का॥
जसे अमृत का निर्झर
बहाता जिसका उदर

[फोन बजता है। नानी एकदम उठकर बैठती है।]

नानी (उठकर) दीनू का फान होगा ! —उसी तरह बजा है !

नाना (फोन उठाते हैं। दूसरी तरफ दीनू) हलो

दीनू नाना, मैं दीनू

नाना (बहुत भावावेग से) दीनू दीनू (नानी पाव घसीटती हुई फोन के पास जाती है) तेरे ही फोन की बाट देख रहे थे बेटा। अभी अभी नानी कह रही थी दीनू का फान नही आया इन दिनो

दीनू आज रेडियो पर युद्ध शुरू होने के बारे म सुना ?

नाना उसी की चिंता है रे हम ! इसी हफ्ते वो छुट्टी पर आने वाला था एकदम पत्र आ गया छुट्टी रद्द हो गई और साथ ही युद्ध शुरू होने की खबर नानी तो बहुत डर गई है दीनू !

दीनू डर तो लगता ही है ! पर डरने से क्या होता है नाना ?

नाना यहा पर हमारे पास भी तो कोई नही तू होता ता भी जी को थोडा तसल्ली रहती कुछ तो धीरज हो जाता रे !

दीनू मैं वहा एकदम कस आ सकता हू नाना ?

नाना और कुछ नही, नानी के लिए उसे बार बार आभास होता है नानी-नानी की आवाजें सुनाई पडती हैं उसे लगता है जसे तू ही आवाजें लगा रहा हो—

दीनू (हसकर) अमरिका से ?

नाना आभास होता रे आभास ! बुढ़ापे का मन है ना ! बुढापा

आए बिना पता नही चलगा (दीनू हसता है।) हस मत, उम्र के साथ सब समझ म आन लगेगा एक बात कहू ! तुझे अब यहा आ जाना चाहिए नानी से कुछ भी नही होता अब !

नाना, यह तो आप हमशा कहते है पर मान लीजिए मैं इडिया आ भी गया तो क्या फक पडेगा ? मैं वहा आपकी क्या सवा कर सकूगा ? उसकी बजाय कोई नस रखिए किसी पेइगगैस्ट का मुफ्त म रख लीजिए एकाध खानसामा रखिए आपको जितने चाहगे उतने पैसे मैं यहा से भेजता रहूगा। आपको कितन पैसे चाहिए ?

(पागलो की-सी स्थिति मे) पसे, पैस, पसे, ! दीनू अरे ! मेरी प शन ही खाक खतम नही होती। यहा खान वाला है कौन ? तरा पसा चाहिए किसे ?

आप उस यू गुस्स स मत बोलिए।

(दीनू को) तू नानी से बोल।

[नानी को फोन देत ह और खुद नानेश्वरी पर सिर झुकाए टेबललैम्प का बटन दबात बठते हैं।]

(फोन पर) दीनू दीनू बच्च ! (दीनू हसता है) तू अब आएगा कब ? हस क्या रहा है ?

नानी मुझे तू अभी तक बच्चा कहकर पुकारती है

(अत्यत भावावेग से) दीनू बच्चा ही ता है तू मरा—

(हसता है) नानी, पर अब तो मेरे बच्चा होन का वक्त आ गया—

है—कोई गडबड है ?

नही अभी कहा ?

लकिन दीनू तुझे अब यहा आ जाना चाहिए। बहुत रह लिया अमरिका ! अब यहा आकर रह ! अर ! हम भी किसक मुह

की तरफ देखकर अपने दिन काटें अब ? तू ही बता नदू भी यहा नही ना ना करता हुआ भी वह मिलिटरी मे चला गया अब युद्ध शुरू हो गया कैसी है रे यह हमारे जी को चिता ! हमने कौन-से पाप किए थे पूव ज म म ! (फ़ोन पर रोने लगती है)

दीनू नानी नानी रो क्यो रही है तू ?

नानी भगवान की इच्छा है ! इसीलिए रो रही हू

दीनू रो मत नानी

नानी तेरे यहा आने तक मेरी आखो का पानी नही रुक सकता— दीनू तू कब आ रहा है, बता

दीनू आऊगा। मुझे क्या यही रहना है ?

नानी पर एसा तो तू आठ साल से कह रहा है।

दीनू आऊगा सच जल्दी आऊगा। मेरा भी तो तुमसे नाना से मिलने का मन करता है नानी ?

नानी सच, तरा हमसे मिलने का मन करता है ?

दीनू हा नानी सच कहता हू ।

नानी मुह से कहा यही बहुत है बहुत है आज की रात तो कम स कम आराम से सो सकूगी।

दीनू रखता हू फोन।

नानी जल्दी आन की कोशिश करना। (फोन रखती है)

नाना क्या कहा उसन ?

नानी कहा आपको मिलने का मन करता है—

नाना (खुश होकर) सच ऐस कहा ?

नानी हा सच ! ऐसे ही कहा ! इतना ही बहुत है। अब जरा सोती हू आज नीद अच्छी आएगी आप जरा ज्ञानेश्वरी पढ़ेंगे ?

नाना हा।

जरा जोरस पढिए—(पर ऊपर कर लेती है और चद्दर ओढ-कर लेट जाती है। नाना ऊ ची आवाज से ज्ञानेश्वरी के दोहे पढते हैं।)

जहा प्रवृति पगु होती।
तक द्रष्टि अधी होती।
इ द्रिया सब भूल जाती।
विषय सग॥
मिटता ममत्व मन का।
और शब्दत्व शब्द का।
जिमम मिलता ज्ञान का। नेय मात्र॥

[अधेरा। पुन हल्का प्रकाश। आधी रात बीत चुकी है। कमर म रग विरगा प्रकाश गोलाकार रूप म घूमता दिखाया जाता है। और 'नानी नानी' की आवाजें बार बार सुनाई पडती हैं। नानी के तनिक पास ही नाना भी सोए हैं। नानी स्वप्न म उठकर बठजाती है। उसके नाक म नथ है। ओढनी भी ओढी हुई है। सामन दरवाजे के पास हल्के नीले प्रकाश म पायलट की पोशाक म नदू खडा है। सिफ उसकी आकृति दिखाई देती है।]

(नाक की नथ और ओढनी को ठीक करते हुए) चले ? पर एक बात है नदू ! विनय की बहन देखने म तो अच्छी ही होगी बेकार दोप मत निकालत बठना एक बार तरा घर बसा दें तो हमारी छुट्टी। उसे देखत ही कह देना पसन्द है' उस भी खुशी हागी चल जल्दी

[दोना बाहर जाते हैं। गोलाकार प्रकाश अभी तक घूमता दिखाई दे रहा है। तभी मृदग की ताल पर भजन गात हुए एक शव-यात्रा सामने से जाती है।

श्रीराम जयराम' का स्वर शरीर पर काटे की चुभन की तरह लग रहा है।

भजन सुरत कलारी भई मतवारी
मदवा पी गई बिन तोले
हसा पाये मान सरोवर
ताल तलया क्या डोले ?

नानी घबराकर दरवाजे के पास लौट आती है। वह स्वप्न से जाग चुकी है। जोर से दरवाजा बन्द करती है और चिल्लाकर चारपाई पर औंधी गिर जाती है। नाना जाग जाते है, उठकर बैठते हैं। नानी की तरफ एकटक देखते हुए।]

नाना तेरे नाक का नथ ?

नानी (टटोलते हुए) कहा है ? (नथ होती ही नहीं है।)

नाना आभास हुआ मुझे लगा तेरे नाक म नथ है मैं सपना देख रहा था

नानी क्या ?

नाना हम नदू की बारात मे जा रहे थे, तेरे नाक मे नथ है, ऊपर ओढनी

नानी सच ?

नाना सच।

नानी मैं भी सपना दख रही थी—

नाना क्या ?

नानी नदू आया है और हम विनय की बहन को देखने जा रहे हैं—

नाना और

नानी मैं जीने तक गई

नाना (घबराकर) और ?

नानी इतने मे बाजे गाजे के साथ आती हुई एक शवयात्रा देखी—

और एकदम घबरा के जाग गई मैं सुन रहे हैं ? (दोनों ही कान लगाकर सुनते हैं दूर से शवयात्रा का वह गान अस्पष्ट सा सुनाई पडता है।) मैं डरी किसलिए जीन स गिर पडती तो

सो जा अब ! पर वो लडकी

कौन-सी लडकी ?

विनय की बहन वो इसी घर म आएगी सो जा तू

[दोनो सा जात हैं। अधेरा। थोडी दर बीत चुकी है। बिलकुल धीमा प्रकाश। कोई दरवाजा खटखटाता है। नानी जागी है। उठकर बैठती है। कान दती है। दरवाजे पर पुन थाप। नाना को उठाना है नाना आखें मलत हुए उठत हैं।]

कौन ?

कोई दरवाजा खटका रहा है।

सो जा तू। यू ही लगता है तुझे !

नहीं जी ! मैं जाग रही हू (दरवाजा फिर से खटकता है।)

इस वक्त कौन आ गया ? (उठते हैं और दरवाजा खोलने के लिए जाते हैं।)

पहले पूछ लीजिए, कौन है

कौन है—?

[आवाज आती है 'तार'। नाना दरवाजा खोलते हैं। दरवाजे म तार वाला। नाना तार खालते हैं। कमरे म कही से एक भयकर स्वर का कल्लोल उठता है।]

कहा से किसका तार है ?

(विक्षिप्त होकर चिल्लाते हुए) नदू दीनू अरे दीनू जल्दी आ रे अपना नदू गया

(चीखती है) नदू नदू

[दोनो ही झुक कर चारपाई का आधार लेते हैं। पीछे की तरफ पृथक पृथक रगो के धुधले प्रकाश म कुछ ढूढते हुए से दीनू—शर्मिला—विनय विभिन्न मुद्राओ मे दिखाई देते हैं। नदू की मृत्यु का समाचार मिलने पर उनके चेहरे जैसे होंगे—वैसे ही चेहरे! तभी अधेरा।

प्रकाश वही स्थल। कुछ दिन बीत चुके हैं। नानी खिडकी के पास स्टूल पर बैठी है। कमरे म बिलकुल खामोशी है। नाना दीवार पर लगे कैलेंडर का पन्ना बदल रहे है। तभी बालकनी पर एक कौवा आकर बठता है और काव काव करता है। नानी गदन उठाकर देखती है। नाना भी मुडकर देखते है। कौवा काव-काव करता है और उड जाता है।]

नाना इसे लगता होगा, हम कहगे—कोई आने वाला है! उड जा—अब कौन आएगा यहा?

नानी दीनू ने कब आने को कहा, दिल्ली से?

नाना आ जाएगा कभी भी—

नानी ऐसे मत कहिए! शायद अभी भी उसका मन बदल जाए।

नाना नानी तू भी पागल है।

नानी हा हू तो?

नाना दीनू को यहा आए कितने दिन हो गए!

(नानी नाना की ओर शून्य दृष्टि से देखती है।) कितनी बार आया है यहा? बीवी को लेकर ताजमहल होटल म ठहरा है।

नानी ऐसे क्या कह रहे हैं? दोनो आते तो थे रोज वो उसकी बीवी

ा अब बीवी को लेकर सैर सपाटा कर रहा है दिल्ली आगरा ताजमहल दिखा रहा है उसे देखो देखो सब कुछ देखो।

ी रहने दीजिए ! मैंने ही कहा था दीनू से ! यहा बैठे-बठे भी क्या करते ? बहू तो पहली बार आई है यहा दिखा लाए उसे सब कुछ इतने सालो के बाद अपना बच्चा दिखाइ तो दिया ? कम से कम हम याद करके यहा आया तो सही

ा वो तुझे देखने नही आया (क्रोध मे आवाज ऊची हो जाती है) विमान से वापिसी के टिकट सस्ते हो गए थे, इसीलिए आया है बीवी को ताजमहल दिखाने दिखाए दिखाए सब कुछ दिखाए सब कुछ दिखाए (खासते हैं)।

ी आप क्यो अपने जी को लगाते है। आप बैठ जाइए आराम से। नही तो खाट पर पड रहिए रात भर नीद नही आती आपको।

ा मत आए, तू कितना सो सकती है, वह भी मुझे पता है।

ी नीद की वो गोलिया भी बिलकुल बेकार हैं—चार चार लो तब भी नीद नही आती। एक झटका लगा नही कि नीद गायब। बार बार लगता है कोई नानी नानी कह के पुकार रहा है दीनू

ा दीनू पुकार चुका तुझे ! विनय ने पुकारा होगा ! आखिर वही तो हमारे काम आया वक्त पडने पर।

ी बहुत अच्छा लडका है। इतनी मदद तो अपना पेट जाया भी नही करता वक्त पडने पर

ा मदद ? तीनो दिन पास बैठा रहा हमारे ! रात को बालकनी मे सोता रहा ! आखिर कौन था वह हमारा ? एक यह अपना दीनू है जिसे दिल्ली आगरा घूमने से ही फुसत नही

ी आप तनिक लेट जाइए बेकार अपना जी क्यो दुखाते हैं।

लगातार यू बोलत-बोलते ब्लड प्रेशर बढ जाता है आपका !

नाना वढने दे ! अरे वह बच्ची र्निमला उम्र मे कितनी है ? वुड्ढे दादा को साथ लेकर दो दफा हो गई ! गले म बाह डालकर फूट फूटकर रोई और यह दीनू ? कहता है वक्त वीतने पर जखम अपन आप भर जाएगा अग्रेजी म कहता है—जसे अग्रेजी म कहने से जख्म जल्दी भर जाता होगा।

नानी आप इतनी इतनी सी बात प चिढ क्या जाते हैं ? गुस्से गुस्से म कही दिमाग की नस फट गई तो लेने के देने पड जाएगे।

नाना पड जाने द और भी जो होना है होन दे ! (सास फूल जाती है।)

नानी होने क्या दू ऐसा कर कर के आप मुझसे पहले प्राण देने जा रहे है ! और फिर मैं कुत्ते विल्लिया के हवाले—

[नानी उठकर पैर घसीटती हुई अन्दर चली जाती है।]

नाना तू अदर क्यो जा रही है, मैं सब जानता हू। अदर जाकर आसू पोछकर वाहर आएगी !

[नानी आखें पोछती हुई वाहर आती है।]

नानी दीनू ने कब आने को कहा है ?

नाना आज। कल सुबह अमेरिका लौट जाने को कह रहा था।

नानी पर यहा कब आएगा ?

नाना क्यो ? उसे अच्छी लगती है, इसलिए मीठी रोटी बनाने वाली है ?

नानी आया भी तो इस दुख मे। क्या बनाकर खिलाऊ उसे ? पर अभी तक आया क्यो नही वो ?

नाना वो वहा फोन रक्खा है। ताजमहल होटल मे कर और पूछ !

नानी (चिडकर) और जरा आपने कर दिया तो क्या हो जाएगा ?

नाना मैं विलकुल नही करूगा (फोन बजता है।)

उठाइए, दीनू का ही होगा
सुनना है तो तू सुन मैं नही उठाऊगा।
(उठकर फोन उठाती है) हलो
[उस तरफ फोन पर शर्मिला।]

ता हलो, नानी, मैं शर्मिला आपकी तबीयत कसी है ?
ठीक है।

ता दादा जी, क्या कर रहे हैं ?
बैठे हैं।

ता उनसे कहिए
रुक, उ ह बुलाती हू
(गुस्से से) मैं नही आऊगा।
दीनू नही है। शर्मिला
(जल्दी से उठकर फोन लेते हैं) क्या क्या है री गुडिया ?
(प्यार से हसते हैं।)

ला क्या कर रहे हैं, दादा जी ?
तरी राह दख रहा था

ला झूठ!
सच!

[इस समय नानी आख नाक पोछती हुई बाहर देख रही है।]

ला पूरा दिन मैं तो रडियो स्टेशन पर थी।
क्यो ?

ला मैंन नाटक म काम किया है। रात को रडियो पर आएगा, सुनेंगे ना ?
सुनेंगे मतलब क्या ? सुनना ही पडेगा कितने बजे है ?

ला रात, दस बजे।
अच्छा!

शर्मिला सुनिए जरूर—याद से।

नाना हा हा (शर्मिला फोन नीचे रखती है तब भी 'हलो हलो' कहते रहते हैं। फिर फोन नीचे रख देते हैं।)

नानी क्या कह रही थी ?

नाना आज रात को उसका नाटक है रेडियो पर।

नानी कौन सा ?

नाना यह पूछना तो भूल ही गया। फोन करके पूछू ?

नानी रहने दीजिए, रात को सुनेंगे तब पता लग जाएगा

[थोडी देर दोनो चुप रहते है। एक दूसरे के चेहरे देखते हुए]

नानी बोलिए ना कुछ—

नाना क्या बोलू ? क्या ?

नानी बोलते नही तो रेडियो लगा दीजिए—

[नाना रेडियो लगाते है रेडियो पर खबरें 'आज दोपहर बगला देश म पाकिस्तानी फौजो ने आत्म सम पण कर दिया—श्रीमती इदिरा गाधी ने युद्ध ब द करने की एक तर्फी घोषणा कर दी है—' नाना रेडियो ब द करते है—कमरे मे चक्कर लगाते हुए वह कमीज की बाह स अपनी आखें पोछते हैं। थोडी दर कमरे म भयानक चुप्पी। नानी पाव खीचती हुई अ दर जाती है। और पुन आखें नाक पाछती हुई बाहर आती है। नाना गदन नीची करके कमरे म घूमते रहते हैं। तभी ऊपर कही से दो चार घास के तिनके नीचे गिरते हैं।]

नाना (सिर से कचरा झाडते हुए) धत्त ! यह कचरा कहा से ?

नानी क्या है ?

नाना घास के तिनके है कचरा (तिनके उठाकर फेंकने के लिए खिडकी की तरफ मुडते हैं।)

फेंकिए मत इन्हें —
क्यों ?
नीचे रख दीजिए—
क्यों ?
(ऊपर देखते हुए) लेने आएगी वो—
कौन ? (ऊपर देखते हैं)
चिड़िया ! घोंसला बना रही है ऊपर—
घोंसला बनाने को जगह अच्छी ढूंढी है।
बनाने दो ! (नाना हाथ के तिनके जहां के तहां रख देते हैं और वहीं खड़े खड़े चिड़िया की बाट देखते हैं) आप वहीं खड़े रहेंगे तो चिड़िया आएगी कैसे तिनके लेने ? (नाना दूर हट जाते हैं। दोनों दूर खड़े होकर चिड़िया की बाट देखते हैं। छिपकर ऊपर देखते हैं।)
वो देख। ऊपर बैठी है पर नीचे नहीं देख रही
देखेगी उसे सब पता है।
वह घोंसला उतार कर नीचे ले आऊं ?
क्यों ?
ऊपर घोंसला बनेगा अंडे फूटेंगे
कुछ नहीं होता। वहीं सब इंतजाम हो जाएगा उनका अंडे देंगी बच्चे होंगे पंख फूटेंगे और उड़ जाएंगे
कौन ! कौन उड़ जाएंगे !
चिड़िया के बच्चे (टेलीफोन बजता है। नाना टेलीफोन उठाते हैं। दूसरी तरफ विनय।)
हलो ! नाना मैं विनय
अच्छा !
दीनू गया क्या ?
नहीं ! आज दिल्ली से आएगा। कल सुबह अमेरिका जाएगा।

विनय यहा रहने के लिए नही माना क्या ?

नाना ज—हा। (विषय बदलने के लिए) और तरा क्या हाल है ?

विनय ठीक है।

नाना तेरी बहन की शादी का क्या हुआ ?

विनय बहन की शादी कही तै नही हो पा रही। (नाना चुप) पिछले हफ्ते स अब तक तीन अच्छे लडक हाथ से निकल गए—

नाना (शात स्वर मे) क्यो ?

विनय लडकी पसन्द है हरेक को पर जन्म-पत्री नही मिलती।

नाना नसीब की बात होती है—

विनय इसी हडबडी मे मैं कल आपके पास भी आ नही सका। आज तो नही पर कल जरूर जाऊगा, सुबह सुबह ही आऊगा

नाना आना आना (विनय फोन नीचे रखता है और नाना भी) इस लडकी के नसीब म क्या है, समझ नही आता

नानी किसके ?

नाना विनय की बहन के

नानी हुआ क्या ?

नाना होना क्या है ? तीन जगह बात चली हरेक न पसन्द भी कर लिया—

नानी तब ?

नाना जन्म पत्री नही मिलती, लगता है उस लडकी क नसीब म सुख नही लिखा उसस नदू की

नानी नही नही, ऐसा कुछ नही सब ठीक हो जाएगा आप बेकार चिन्ता मत कीजिए।

नाना वो बात नही मेरा मन क्या कहता है, पता है ? नदू से ही उसकी जनमगाठ थी—वहा खेल खतम हो गया जब उसका

और कही जुडना मुश्किल है—मुझे तो—
ऐसे मत कहिए कही न कही जरूर तँ हो जाएगा
उसकी ज म-पत्री जरा मागत हैं
क्या ?
नदू की पत्री क साथ मिलाकर दखनी चाहिए
(कातर स्वर मे) अव उसकी क्या जरूरत है ?
अपन मन की तसल्ली क लिए मुझे अब भी बार-बार यही लगता है, उसकी और नदू की पत्री मिल जाती । पूरे छत्तीस के छत्तीस गुण मिल जात ।
सब कुछ खतम हो गया अब बार-बार उसी की क्या चर्चा करते है—
पर विनय का फोन जब आएगा तो मैं उसे कहूगा
क्या ?
उसकी शादी कही त न हुई तो उसे यही लाकर रख लें हम बहू की तरह दख भाल करेग उसकी
(गुस्से से) दूसरे की लडकी यहा कसे रहगी ?
नदू अगर एक महीना पहल छुट्टी पर आता और शादी कर के वापिस जाता तो वो आ न नदू की विधवा
(चिल्लाकर) पागलो की तरह जो मुह म आए मत बोलत जाइए
(विक्षिप्त हुए-से देखते रहते हैं।) पागलो की तरह क्या बोला हू मैं ?
आप कुछ मत बोलिए, चुप बठे रहिए।

[नाना चुप बैठे रहत है। तभी अधेरा। प्रकाश। शाम का समय। सडक पर का लम्प जलता है। मेज पर काट रखकर दीनू एक छाटे स्टूल पर वठा है। उसके पास ही नानी बैठी है। वह प्यार से बीच-

बीच म कभी दीनू की पीठ पर हाथ फेरती है, कभी उसक बालो म हाथ फिराती है। लेकिन नाना जग गुस्स म है। वह दूर आराम कुर्सी पर बैठे है। कुछ अस्वस्थ है। ज्यादा बोल भी नहीं रह। सिफ बीच बीच मे बालत है। अपना गुस्सा जाहिर करते है। कभी उठत हैं। हाथ की मुटिठ्या भीचत है और कभी माथे पर हाथ मारत हुए कमरे म चक्कर काटत रहत हैं। बीच म जरा थककर असहाय से चारपाई पर बठ जाते हैं! सडक पर का दिया जब जलता है, उस वक्त नाना और दीनू की वातचीत चल रही है।]

नाना (तग हाकर) तुझसे कुछ भी कहा तो तू पैसो की बात करता है पम कितने चाहिए वा बताइए जितने चाहिए भेजता हू

नानी पैसा चाहिए किस ? इ ह जो प श न मिलती है वही खाकर खतम नही होती ! पैसे का करना क्या है ? खान वाला कौन है यहा ? रक्खें भी ता किसके लिए रक्खें ?

नाना उस लका की सोन की इटें चाहिए ही किसे ? यहा की इटे ढह रही है इ ह दखो।

दीनू (मुडकर नाना की तरफ देखते हुए) आप ही बताइए नाना अब मैं क्या करू ? आखिर आप चाहते क्या हैं ?

नाना (हताश होकर) मेरे चाहने से क्या हागा ? हमार चाहन का पूछता कौन है ? हम श्मशान की तरफ मुह किए हमारी कसी चाहना ?

दीनू लेकिन जरा सुनू तो सही आपका कहना क्या है ?

नाना कहू ? मानगा ?

दीनू कहिए कहिए तो सही

नानी मेरी मान बेट पैसा और पसा सुख और सुख इस

सुख और पसे क पीछे मत दौड छाती फटने तक मत दौड यहा जो मिलता है उसी को कुबूल कर ले आखिर यह अपनी मिट्टी है

(हाथ के इशारे से बात को उडाते हुए) अच्छा ! तो अब आपका मर्जी क्या है ?

। देख ! तू इजीनियरिंग पढा हुआ है वहा विदेश म पुल बनवाता है यहा क्या पुल बनवाने का काम नही है ?

तो उसके लिए क्या यहा पी० डब्ल्यू० डी० म साढे चार सौ पर जा जाऊ ? यह चाहत है आप ? कोई भी नासमझ बेवर सानियर है सिर्फ इसीलिए उसके अडर काम करू ? पील और खाकी—सरकारी कागजो पर अपने शेफर्स और पारकर पेन खराब करने लगू ?

। ठीक है ! वो मत कर तू कोई अपना धधा शुरू कर ! उठते बैठते पैसे की बात करता है ला वो पैसा ला और डाल धधे म पुल बाध कर दिखा यहा भी ले का टक्ट। तुझे पैसा कम पडेगा तो मैं दूगा पैसा इकट्ठा करने की जिम्मेदारी मुझ पर रहो।

। यह तरे भले के लिए ही है दीनू ! ऐसी वसी कोई बात हुई तो मगलसूत्र की एक मणि रखकर अपने सारे गहने बेचकर भी तेरी कमी पूरी कर दूगी ! तू डर मत दीनू !

(बोर होता है) नानी तुझे कैसे समझाऊ ? तुझे समझ म नहीं आएगा पर नाना आपको तो समझना चाहिए !

। क्या ? क्या समझना चाहिए ?

इस देश म धधा करो धधा करो, कहना आसान है ! सभी कहते हैं धधा करो, धधा करो लेकिन धधा करना यहा आसान है क्या ?

। क्या ? क्या नही ?

दीनू अरे, यहा सालो साल सरकारी कागज हिलते तक नही। उन्हे हिलाने के लिए हर कदम पर पैसा चढाना पडता है यही सब करो तो टेंडर मिलेगे वरना? क्वालिटी की कदर करोगे तब तो बाहर फेंक दिए जाओगे! जरा एक बार दिल्ली होकर आइए! लगता है, वहा का हर वशर ऊपर की कमाई पर जिदा है सिर्फ सडको के नाम देख लीजिए! सत्य मार्ग! नीति मार्ग! यहा मुझ जैसो का बिलकुल गुजारा नहीं। यहा सिर्फ चोरो की गुजर है!

नाना (चिढकर) अरे पर तुझ जसे सभी उठकर बाहर चले जाएगे तो चोर ही पनपेंगे ना?

दीनू पनपने दीजिए

नाना फिर हमारा अपना देश कैसे ऊपर उठेगा?

दीनू गुस्सा ना हो नाना तो आपको एक बात बताऊ?

नाना क्या?

दीनू मुझे यह देश अपना लगता ही नही! सच!

नाना तो फिर यह देश है किसका? चोरो का?

दीनू हा! चोरो का! और जो किसी भी तरह से हैल्पलैस है असहाय है उनका आप जसो का या फिर मेरा देश मेरा देश कह कहकर छाती पीटने वालो का उनका है यह देश मेरा नही!

नाना दीनू! (उसकी ओर घूरकर देखते है) तुझे हुआ क्या रे?

दीनू होना क्या है?

नाना तू यहा जन्मा यहा बडा हुआ और यह देश

दीनू झडे की वन्दना के समय दिए जाने वाला भाषण है यह नाना! मेरे मन पर इसका जरा भी असर नही होता! प्रत्यक्ष परिस्थितिया असर करती हैं मुझ पर अपनी बुद्धि, शक्ति और कल्पना, नष्ट करने वाले ढोगियो का देश है यह!

था नही ढोगियो का यह देश पर अब हो गया है अगो म कुछ मस्ती हो तो करके दिखाओ बगावत तुम इन ढागो के विरुद्ध लो टक्कर सबने सिफ एक शिकायत पेटी बनाकर रख दिया है इस दश को जा कोई उठता है, अपनी शिकायत डाल देता है इसम पेटी खोलन की जिम्मेदारी किसी पर नही ! अमेरिका म गगा बह रही है उसमे हाथ धो लो, बस इतना ही है तुम्हारा शौय तुमने क्या किया ? वहा की नरम हरी घास पर चरत रहे, इतना ही ना ? हिम्मत है तो यहा कुछ करके क्या नही दिखात ? जरा अपनी बुद्धि पर जोर डालो शक्ति कल्पना का यहा भी कुछ करो उपयोग अपन देश के लिए भी !

य सब कहना आसान है, नाना ! कोई जब कुछ करन जाता है तो

अरे लेकिन यहा

यहा है क्या ? पाच पसो की टिकिट के लिए पोस्ट आफिस जाओ पाच घटे खडे रहो वहा लिखने की कलम तक बाधकर न रखो तो गायब बैंक म जाओ आलपिन चोरी हुए मिलेंगे टैक्सी रोको पास कहीं जाना हो तो रुकेगी ही नही दुकान पर जाओ दुकानदार को बात करन की तमीज नही यह लोग मुझे अपन लगते ही नही कलम और पिनें चुरान वाले लोग मेरे नही सत्य माग के डाक-खान स पन चोरी हो जाएग और नीति माग के बक से पिनें चोरी होगी ! एसा ढाग मुझे अच्छा नही लगता। ऐसा सत्य और एसी नीति मुझ नही चाहिए !

(हताश होकर) ठीक है। ठीक है। यह दश बकरो का तो है ना ?

मुझे इसम जरा भी शक नही !

नाना (गुस्से से) फिर अपने नदू ने किसलिए प्राण दे डाले ? इस दश के लिए ही ना ?

दीनू उसका दुर्भाग्य। मैंने उसे कितनी बार लिखा तू अमेरिका आ जा। तेरा भी कुछ कल्याण होगा।

नाना फिर वह क्यो नही गया तरे पीछे पीछे।

दीनू नही पटा उस। वो मेरा देश मेरा देश कह कहकर छाती पीटने वाला म से

नाना (गुस्से से) तो फिर कल के इस युद्ध म बीस बीस, बाईस बाईस साल के लडके अपनी वीरता दिखाकर प्राण गवा गए, वो किसलिए ? आखिर किसलिए मरे वे ? इस देश मे कुछ है ही नही तो वो क्यो न्योछावर हो गए ?

नानी (सबको चुप कराने के लिए) दखिए आप अब बेकार चिल्लाइय मत। मरने वाले तो अपन प्राण द ही जात है, हमारे चिल्लान से क्या होगा ? (दीनू को) तू भी एस मत बोल दीनू। उनसे ठीक तरह से बात कर

दीनू (नाना के पास जाते हुए) छोडिए। नाना इस विवाद म ना पडना ही अच्छा है। इससे कुछ हासिल नही होने वाला नदू लडाई मे मारा गया, इसीलिए तो मैं आया आपको देखने— मिलने इस दु ख म अब और कड़ुवाहट किसलिए ?

नाना (अपने से ही) दु ख म। दु ख किस। पर इतना कहा तूने, यही बहुत है।

नानी (बोर होकर) आप जरा वहा आराम से लटत है या नही ? यह क्या छेड रक्खा है आज आपने ?

नाना मैं तो कुछ नही कहता किसी से (खाट पर अस्वस्थ हुए से बैठ जाते हैं।)

नानी आप लेट जाइए जरा आराम से। मुझे बात करन दीजिए दीनू से। (दीनू की पीठ कधो पर हाथ फेरते हुए) दीनू

तू दिल वा मत लगा लना इनकी वातें स्वभाव ही ऐसा है इनका अव बुढापा आ गया है ना! इसलिए कुछ ज्यादा—

नही नानी मैं नाराज नही हू!

ता तून यहा रहन के बारे म क्या सोचा है?

यहा कसे रह सकता हू मैं नानी?

यहा मत रह तू अलग रह पर कम से कम हमारी नजरो क आस पास तो रह।

लेकिन नानी यहा रहकर मैं करू क्या?

य कह रह हैं ना धधा कर।

(वोर होकर) तू नही समझ सकेगी नानी!

ठीक है, मुझ मरी को कुछ समझ नही आता पर अपने बच्चा का प्रेम तो समझ म आता है? वही भूलती हू उसका क्या करू? (भाव विह्वल हो जाती है।)

नानी अब क्या पहले जैसे वक्त है? लडके को मा बाप की सेवा करनी है—सेवा करनी है का मतलब क्या है? कधे पर वहगी रखकर काशी थोडे जाना है? ट्रेन की नही ता प्लेन की टिकिट लेकर टिकिट क पसे होने चाहिए। (नाना एकदम गुस्से से देखते हैं।)

नही नही बाबा! अब काशी जान की इच्छा नही हम काशी गए थे तब तू इतना सा था ठड स गाल और ओठ फट गए थे तेरे अभी तक याद है! ऐसा लगता है वो कल की बात है नही नही! अब काशी नही! कुछ भी नही चाहिए।

फिर मैं यहा किसलिए रहू? क्या करू?

कैसे वताऊ नीनू! यह बतान की नही समझने की बातें हैं बट! कसा महसूस हाता है यह वताया नही जा सकता जब

तक तू हमारी उम्र म नही आएगा समझ नही पाएगा जब समझ म आएगा तब तुझे जरूर हमारी याद आएगी लगेगा नानी जो कहती थी सच था, पर उस वक्त हम नही होग न सही (ऐसे लगता है नानी अपने आप बोल रही है) शादी हुए काफी साल हो गए थे बच्चा नही होता था कितने व्रत उपवास किए क्यो ? किसी स्टेट का वारिस नही चाहिए था यहा ह कौन सी स्टेट ? पर बुढापे की लाठी चाहिए थी अपने साथ ! अपना कोई हो यही काफी होता है अपना सिर तक धोना हो ता अब वा नही सक्ती मैं सब इ ह करना पडता है

दीनू इसीलिए कहता हू कोई कामवाली रख लो एकाध नस रख लो उसकी पगार मैं दूगा ! मरे यहा रहन स क्या होगा ?

नानी पैसो से य सब नही होता है रे ! कभी सोचती हू बहू होती तो वो मेरे बाल धो देती बाल सुलझाकर जूडा बना देती कभी लगता है दूसरे के हाथ का खाना मिले साला-साल खुद ही चावल उबालना खुद ही दाल पकाना खुद ही निगलना। (गदन हिलाती है) लगता है किसी के लिए मैं कुछ करू मेरा दीनू कहे नानी मीठी रोटी बना ना ? बहू कह आचार डालिए ना ! पोती-पोते कहे दादी खीर बनाना !
कुछ बनाने का शौक आता है तो अब ऐसा कोई शौक रहा ही नही सोचते थे नदू तो पास रहगा शादी करेगा बढती हुइ बल फुलवारी बनेगी पर उसका यह दु ख देखना पड गया अब तू अकेला ही है रे हमारा ! इसलिए लगता है पर जबरदस्ती नही हम जबरदस्ती करने वाले होत कौन है ? आज हैं हम, कल नही ! तू वहा पसा कमाता है रे, और यहा कितना कष्ट सहकर तुझे बडा करन वाल तेरे बुड्ढे असहाय मा बाप किसी न किसी तरह अपन दिन पूरे

कर रहे ह

एसा क्या कहती है नानी तू ?

मैं कुछ नही कह रही। अब सिफ एक ही इच्छा है तरे होत ही हमारी आखें मिच जाए अब और जीन की जरा भी इच्छा नही

लेकिन क्या ? विदेशो के बुड्ढे लोगो को दखो ! आखिरी दम तक जीवन के हर क्षण का उपभोग करत हैं व !

दूमरा से हम क्या वास्ता ? जो हमारा है, वही सच है। अर, पिछल दो साल से घर म गणपति तक नही लाया कोई लाए कौन ? कौन सभी नम पूरे करे ? दीवाली आती है, चली जाती है कौन है घर म मिठाई खानेवाला ? मन करता है पोते-पोती हठ करें पटाको के लिए उनका हाथ पकड फुलझडिया चलाए (नाना से बठा नहीं जाता वह उठते हैं और अदर जाने लगते ह। जाते जाते शट की बाह से अपनी आखें पोछते हैं। नानी मुडकर उन्हे देखती है। दीनू गदन नीची किए चुपचाप बठा रहता है।) सब कुछ बिखर गया है मन म अब काई आशा ही नही बची। (इतने मे नाना अदर से लोटा भर पानी लाते ह और बालकनी पर लगी बेल को देते ह। थोडी देर कमरे मे भयानक चुप्पी)

वह क्या नही आइ ?

थक गई है सफर से

तो मैं क्या उसे यहा काम पर लगाती ?

कहने लगी जरा आराम करती हू ! मैं जब चला तब सोई हुई थी।

अब बुला ले उस, खाना यही खाकर जाना।

(हसता है) यहा कस खाएगी वो ?

क्या ? अच्छा नही होता मेरे हाथ का खाना ?

दीनू उनका खाना अलग है। हमारा अलग।

नानी जब तू उनका खाना खा सकता है तो तेरा वो क्या नही खा सकती ?

दीनू (हसता है) रहने दो !

नानी चार छ दिन तो और रह जाता ! इतने साला के बाद आया है तू और मैं कुछ बनाकर खिला भी नही सकी तुझे। आया भी तो इस दु ख म। रह जा कुछ दिन

दीनू नही नानी मुझे जाना पडेगा कल । चलता हू अब कल सुबह यहा आ जाएगे हम चाय यही पिएगे और यही से एयरपोट चले जाएगे

नानी मतलब तेरी जान की पूरी तैय्यारी है

दीनू जाना ही पडेगा ! पर आऊगा मैं हर साल आऊगा

नानी आ चुका ! अब की बार आठ सालो बाद आया है बैठ थोडी देर

दीनू (जाने के लिए बाहर निकलता है) नही जाता हू मैं वो अकेली है, होटल मे

नानी (जरा चिढकर) पाच मिनट तो बैठ पाच मिनट म क्या हो जाएगा ? हम यहा साला साल अकेले बठे रहत है।

दीनू (कोट पहनते हुए) चलता हू मैं !

नानी भगवान को नमस्कार कर इन्हे नमस्कार कर

[दीनू भगवान का नमस्कार करके आता है। नाना उठकर खडे हो जाते है। दीनू झुककर उनके पाव छूता है। नाना आखें पोछते हैं। उनका गला भर आता है।]

नानी दीनू जरा पास बैठ रे। नीचे बैठ ऐसे !

[दीनू नानी के सामने बैठता है। वह उसका चेहरा अपने दोनो हाथो मे रखकर देखती रहती है।]

ू ऐसा, क्या देख रही है नानी ?

ी तेरा रूप आखो म भर लू यह हमारा आखिरी भेंट (रोती है)

ू ऐसे क्या कहती है तू नानी ? मैं आऊगा वापिस—

ी तब तक मैं नही रहूगी। तू हमारी चिंता मत करियो तू सुखी रह हमारा जो होगा, सो होगा माथ की रेखाए है कौन बदल सकता है इन्ह ? कल सुबह जरूर आ

[दीनू दरवाजे तक जाता है। उसके पीछे लगडाते हुए नाना और पाव घसीटती हुई नानी।]

ू चलता हू, नानी !

ी कल सुबह आ जरूर तू ! नही तो सीधा उधर से ही चला जाएगा।

ू चला कसे जाऊगा ? आऊगा कल—

ी और देख तुझे एक बात कहती हू तेरे हित की—

ू यहा रह जाने की ? रह जाएगा ?

ी इसीलिए थोडे तू यहा रह जाएगा ? मत रह एक ही इच्छा थी तेरे यहा आते ही हम दोना को मौत आ जाती ता

ू क्या बोले जा रही है नानी तू ?

ी झूठ नही कह रही रे ! तेरे हाथो से हमारा सब कुछ हो जाता।

ू पर हम ऐसा सोचें क्यो ?

ी ना सही पर एक बात तेरे हित की कहती हू।

ू कल कहना

ी अब मन मे है इसलिए कहती हू ! रात हम कुछ हो गया तो ऐसा न हो मन की मन म ही रह जाए

ू क्या कहती है ?

नाना देख तेरे हित की है इसलिए कहती हू पसे के लिए ज्यादा मारामारी मत कर पैसा और पैसा और सुख सोच-सोच के इतनी धाव धाव क्या करता है ? पैसे से ही सब सुख नही मिलते सुख आखिर सुख मान लेने मे है। तू सुखी रह लडका हुआ तो उसका नाम इश्वर का रखना।

[दीनू यह सब सुनता हुआ नीचे उतर जाता है। नाना नानी आखे पोछकर बालकनी मे खडे रहते है। हाथ हिलाते हैं। हाथ हिलाते हिलाते नाना धोती के किनारे से आखें पोछते है। नानी भी साडी के पल्ले स आखें पोछती है और दीनू—कल आ जाना रे' कहकर चीख पडती है। नाना अन्दर आते है और मेज के पास बठ जाते हैं। नानेश्वरी उलटत पलटत टेबललैप का बटन दबाते रहते है। नानी आखें पाछती हुई अदर आती है।]

नाना (आह भरते हुए) हरे राम हरे राम हरे राम राम

नानी आगन से कोई बडा पेड उखड जाने से जसा बियावान लगता है, आज वैसा लग रहा है (खाट पर बैठती है और ऊपर चिडिया के घोसले की तरफ देखती रहती है।)

नाना क्या देख रही है ? (वे भी थोडी देर ऊपर देखते रहते हैं। तभी दूर से मृदग का स्वर सुनाई पडता है, और साथ भजन।)

सत पदाची जोड दे रे हरी ! सत पदाची
सत समागमे आत्म सुखाचा सुदर उगवे मोड
अमत म्हणे रे हरि भक्ताचा शेवट करिसी गोड

(नाना उठते हैं।)

नानी आप जा कहा रह है ?

नाना कैसी आवाज है जरा दखता हू

नानी कोई जरूरत नही, वहा जाकर देखने की भगवान जाने गव

को गात बजाते क्यो ले जात हैं व्यथ दूसर के जी का दु ख
(बालकनी पर जाकर देखत हैं और—) शव नहीं नानी
आ जा
क्या है ?
भजन मडली जा रही है पढरपुर को भजन मडली
भजन मडली ? चलिए हम भी चलते हैं वापिस आएग ही
नही
चलन की ताकत होती तो जरूर जात—

[दोना बालकनी पर खडे रहत हैं। नीचे से भजन मडली गुजरती है। गस बत्ती क प्रकाश म पालकी जाती है। भगवे ध्वज लहरात है। ताल मदग, भजनो की आवाज आती रहती है। प्रणाम करके नाना-नानी अदर आत हैं। भजन मडली के दूर जान की आवाज आती है। नानी खिडकी के पास बठती है। नाना मेज के पास। थोडी देर शाति। अभी भी दूर से ताल मदग का स्वर सुनाई द रहा है। नाना नानी ऊपर चिडिया के घोसल की तरफ देखत हुए बठे रहते हैं। ऊपर से दो चार तिनक हवा स नीचे गिरत है।]

सच बताइए आज आप लगातार क्या सोच रह है ?
सोचना क्या है ?
यही ना कि हम अब किसक लिए जिए ? जीने का कोई
अथ नही रहा अब मुझे बार बार ऐसा लग रहा है—
क्या ?
हम अब सो जाए और सुबह उठें ही नही। (नाना एकदम
चौंककर देखते हैं) इसस क्या होगा !
क्या होगा ? क्या होगा नानी ?
दीनू यहा है वो हम कधा देगा अग्नि देगा क्रिया-कम

वह कौन ?

और कौन ? वही, वह उसका नाम रक्खेगी जाज जानसन थामस यानी यहा से सदा के लिए नाता टूट गया मेरा नाम ही मिट गया ! अ दर कही से सब तार तार हो गया लगता है मुझे !

[नानी अन्दर जाती है और दो कप दूध लेकर आती है। मेज पर रखती है—]

डाल दीजिए इसम गोलिया खूब सी !

[नाना उसकी तरफ चौककर दखत है। वह नही दखती। अन्दर जाती है। नाना मेज की दराज स गोलिया की शीशी निकालत है। दूध म डालते है। शीशी मेज की दराज म रख देते हैं और रसोई म जात हैं। इतने म नानी पैर घसीटती हुई आती है। गोलिया की शीशी उठाकर दोनो कपो म जल्दी जल्दी गोलिया डालती है। अपना कप उठाकर पीन लगती है। तभी पैर पोछते हुए नाना बाहर आत है। दोनो दूध पी लत हैं। नानी कप अ दर रखकर आती है।]

(एकदम होशियारी जताते हुए) आज जरा बाहर घूमकर आए क्या ?

(हसती है) दिन अच्छा ढूढा है

क्यो ?

घूमन क लिए। आप ज्ञानेश्वरी पढिए ऊचे-ऊचे। लटती हू मैं थाडी देर तक आप भी लट जाइय—मरे पास।

अच्छा अच्छा ! (मेज के पास बठकर ज्ञानेश्वरी पढ़ते हैं।)

ऐस अनादि पर ब्रह्म। जगदादि विश्राम धाम
उसका है एक ही नाम। कहा तीन प्रकार स ॥

नानी जरा ऊची आवाज म पढिए—

नाना अच्छा ! (ऊ ची आवाज निकालते हैं, पर वह दूसरी लाइन पे नीचे आ जाती है।)

मसार दु ख से जो हैं पीडित।
जीव आत उसके पास नित।
उनको वो ! देता है सकेत—जो यह नाम ॥

नानी (उठकर बठ जाती है और दीघ सास लेकर हवा मे कुछ सूघने लगती है।) कैसी सुग ध है ?

नाना (मुडकर देखते हैं।) उठ क्यो गई ? क्या हुआ ?

नानी आपका किसी चीज की सुग ध नही आ रही क्या ?

नाना सुग ध ? कैसी सुग ध ? गोलिया की ?

नानी गोलियो की नही—

नाना तो ?

नानी जच्चा के शरीर से आती है जैसे—हल्दी की—तेल की—धूप की सुग ध—

नाना सो जा तू—यू ही लगता है तुझे—

नानी आज सुबह म्हादू को पूछना चाहिए था मुझे—उसकी औरत क बच्चा हुआ या नही—

नाना सो जा तू सो जा—(विक्षिप्त हुए-से बालकनी पर जाते हैं।)

नानी कहा जा रह है ? बाहर मत जाइए—

[नाना चुपचाप बाहर जाते हैं और गमले म लगी बल उखाड कर ले आते हैं।]

नाना (भयानक हसी हसते हुए बेल एक तरफ फेक देते हैं, नानी की तरफ देखते रहते हैं।) तू सो जा—सो जा तू (अलमारी खोलत ह।)

क्या कर रहे है ? सो जाइए ना आप !
सोता हू सोता हू फोटो देख रहा हू (फोटो लेकर आते हैं) देख अपनी मालू, कैसी लग रही है ? आज वह होती वह होती आज
बेकार जी मत दुखाइए अपना। सो जाइए। दखू दखू । (फोटो देखती है फोटो को चूमती हुई) सोती हू आप पास आइए जरा रेडियो ऊचे स लगाइए !

[नानी सो जाती है। नाना रेडियो लगात है रेडियो पर भजन चल रहा है।]

प्राची की ओर से जो प्रवाह बहता
उसम उल्टा ही कोई तैरता
उसका हठ अवश्य ही रहता
पानी खीचता ओघ म ही।

नीद आ रही है आप भी सो जाइए ! मेरे पास सोइए
रेडियो ऊचा कीजिए
आया आया

[पागलो की तरह इधर उधर घूमते है। दरवाजा खिडकी बद कर दत है। रडियो ऊचा करत हैं। और उसी शोर म जोर से ज्ञानेश्वरी का एक दोहा भी बालत हैं। तभी दरवाजा खटकता है। नाना दरवाजा खोलत हैं। दरवाजे म म्हादू।]

तार आई है ! [नाना के हाथ म तार दता है। नाना तार पढत है।]
तर लडका हुआ है म्हादू ! (म्हादू उनके पर छूता है।)
मा जी सो गइ ?
हा।
सुबह की बस से गाव चला जाता हू

नाना हा जा ! (अलमारी मे से कपडो का एक गठठा लाते ह और एक सोने की चेन।) यह कुछ कपडे हैं तेरे बच्चे के लिए और यह चेन हमारे नदू की है ले डाल देना अपने बच्चे की कमर म।

म्हादू (पाव पडता है) माजी से कह दीजिए

[म्हादू चला जाता है। नाना दरवाजा बद करते हैं। तभी फोन बजता है। नाना फोन उठाते हैं। दूसरी तरफ शर्मिला—"दादा जी दादा जी" कहकर आवाजें लगाती ? । नाना दु ख से दीवार के साथ सिर टेक लेत है और फोन नीचे रख देत हैं। पुन फान बजता है। दूसरी तरफ शर्मिला। "राग नम्बर" कहकर नाना फोन नीचे रख देते है और ज्ञानेश्वरी पढने लगत ह। पास ही रेडियो भी चल रहा है। टेली फोन की घटी फिर बजती है। नाना उठते हैं। नानी के शरीर पर की चद्दर ठीक करते हैं। ऊपर से चिडिया के घोसले से दो चार तिनके गिरते हैं। नाना ऊपर दखते हैं। फिर मेज क पास की कुर्सी पर बैठकर ज्ञानश्वरी देखन लगते हैं। उन्ह नीद स झपकिया आ रही हैं। फान की घटी बज रही है। अधेरा।

प्रकाश। टेबललैम्प जल रहा है। ज्ञानेश्वरी पर सिर रक्खे नाना कुर्सी पर ही सोए हुए है। मध्य रात्रि का रडियो पर चलने वाल निरथक स्वर। अधेरा। प्रकाश। सुबह। ऊपर से घासल के तिनक गिरते हैं। रेडियो पर सुबह क भजन।]

प्रभु जी ! तुम चंदन हम पानी
जाकी अंग अंग बास समानी।
प्रभु जी ! तुम दीपक हम बाती

बाहर से दरवाजा जोर-जोर से खटखटाता हुआ दीनू—'नाना नानी नाना" आवाजें लगा रहा है। तभी परदा।]

[समाप्त]

'लिपि' द्वारा प्रकाशित

समकालीन रंगमंच के लिए आज के बहुचर्चित नाटक

बकरी
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

जलूस
बादल सरकार

अंत नहीं
बादल सरकार

दंभ द्वीप
विजय तेंडुलकर

संध्याछाया
जयवंत दलवी

सांपउतारा
शिवकुमार जोशी

गुफाएं
मुद्राराक्षस

दूसरा दरवाजा
डा० लक्ष्मीनारायण लाल

सिंहासन खाली है
सुशीलकुमार सिंह

नागपाश
सुशीलकुमार सिंह